पराशर



डा० काञ्चीनाथ झा 'किरण'

चिनगी प्रकाशन

पराशर

डा० काञ्चीनाथ झा 'किरण'

चिनगी प्रकाशन :
(मो० वेलवागंज पो० लहेरियासराय)
दरभंगा

प्रकाशक : चिनगी प्रकाशन

मो० बेलवागंज पो० लहेरियासराय

दरभंगा।

प्रथम संस्करण : १९८८

प्रति १००० एक हजार

मूल्य—१५ (पनद्रह टाका)

मुद्रक : कुमार प्रिंटिंग प्रेस, दरभंगा

पराशर ओ किरण : कृति ओ कृती

लगभग दू दशक पूर्व जखन किरणजी चौसठिक चौकठि पर ठाढ़ मिथिला-मैथिलीक सजग प्रहरी जकाँ जागरूक छलाह ओ आइ एखनहु बेरासीक देहरिपर बैसल अपन तपी जीवनक चिन्तनमे आसीन छथि, तखनहु हुनक अन्तश्चेतनामे कोनो व्यतिक्रम वा व्यकलन नहि देखि पड़त। 'विजेता विद्यापति'क भूमिकामे हुनका विषयमे लिखल गेल निम्नांकित पाँती ओहिना समन्वित भेटत :—

"वाणीमे स्पष्टता, विचारमे प्रौढ़ता, चिन्तनमे मौलिकता, सामाजिक जीवनमे सुधार करबाक दुर्दान्त आग्रह आ' तदनुकूल आचरण, दलित-पीड़ितक प्रति सहानुभूति, क्रान्तिक प्रखरता अथापि शान्तिक रम्यता, सिद्धान्तमे कठोर अथच व्यवहारमे कोमल–किरणजीक चरित्रक रूप-रेखा थिक।"

एहि रूपरेखामे किछु निखारे होइत रहल। वृद्धताक कारणेँ कोनो वैचारिक उतार नहि। शारीरिक शिथिलता अयनहु कोनो प्रकारक मानसिक श्लथता नहि। वाणीमे उद्दीपना, चिन्तनामे कर्म-प्रवर्तना ओ कल्पनामे नव-नव उद्भावना—एखनहु तीक्ष्णसँ तीक्ष्णतर, उग्रसँ उग्रतर—जाग्रत्-जगजिआर देखबामे आओत।

'पराशर' हुनक अद्यतन रचना थिक। एकरा ओ अपना मुहेँ ने सर्गबन्ध महाकाव्य कहता ने छान्दस कविकर्म मानता। ओ की थिक, से अपनहि अनुमान्य थिक। हमरा जनैत 'पराशर'क ई कृति-कोमुदी सोड़ह कलासँ परिपूर्ण महाकाव्य थिक। सर्ग, अध्याय, उच्छ्वास, परिच्छेद, अंक—साहित्य विधाक जे विभाग कयल जाइछ, ओकरा जे कोनहु अभिधान देल जाइछ से एतहु अष्टाधिक सोड़ह संख्यामे निबद्ध अछि। कथावस्तु, नायक, रस ओ उक्ति-विच्छित्ति देखल जाय अथवा देश-काल, व्यक्ति-समाज ओ आचार-व्यवहारक समुच्चय मानल जाय, प्रकृतिवर्णन ओ मनोभावक विश्लेषण सुनल जाय किंवा कथानकक परिधि, चरित्र ओ उक्तिक उदात्तता गुनल जाय—'पराशर' अपनामे पूर्ण अछि—महाकाव्यक गरिमासँ सर्वथा मण्डित अछि।

छन्द-बन्ध एहि महाकाव्यक उन्मुक्त अछि। कोनो लाक्षणिक बन्धन एकर प्रवाहमे गतिरोध नहि आनि सकल छैक। कविक लेखनी गिरिनिर्झरिणी जकाँ पथवर्ती शिलाखण्डकेँ अपन वेगमे बहबैत, तटवर्ती

वैचारिक वन-वनस्पतिक जीर्ण-शीर्ण मूल-पत्रकें भसिअबैत, लोक-कल्याणक सिन्धु-सन्धानमे प्रवाहित अछि। प्राच्य-अर्वाच्य दूहू तटक बीच कल्पना धारामे जे उद्दाम आवेग अछि से प्रतीत करबैछ जे कोनो 'वायरन', कोनो 'नजरुल' कोनो 'उग्र'—जेना मैथिलीकें भेटि गेल होथि।

एतय पुरान मुनि पराशर; बुझि पड़ैछ जेना सद्यः युगानुरूप काया-प्रवेश कऽ लेने होथि। शंकराचार्य जकाँ परकायप्रवेश सिद्धिसँ अम-रुकक रूप ग्रहण कामशास्त्रक प्रयोग विशेषक लक्ष्यसँ कय लेने होथि। रूपें चिन्हार, कपें परिचित तथा क्रियाकलापें अद्भुत रूपें चित्रित। एहि विचित्रताकें जेना एतय सजीवीकरण कयल गेल हो। किरणजीक कथा-शिल्प एहि स्थलमे अनन्य प्रतीत होयत। हुनक पात्र-चरित्र एक नव परिवेशमे, अतीत जेना वलमान अभिनिवेशमे रूपायित दृष्टिगोचर होइत हो।

गोत्रप्रवर्तक पराशरकें अपन रचनाक केन्द्रबिन्दु बनयवामे कविकें जाहि लऽ कऽ प्रेरणा भेटल छनि, बुझि पड़ैछ ओ थिक पात्र-चरित्रक नम्यता। जाहि दिशामे मोड़ देल जाय ओ मोड़ा सकैत छथि, हुनक चरित्रकें जाहि लक्ष्यमे जोड़ल जाय जोड़ा सकैत अछि।

स्पष्टतः इतिवृत्रक प्रसंग पुराणेतिहासकें उपजीव्य बनयवाक परम्परा जे प्रचलित रहल तदनुकूल ई अवश्य पुराण-भारतसँ प्रवर्तित अछि। किन्तु से रहितहुँ ई अभिनव-कविकल्पनासँ समन्वित अछि। ध्वनिकारक उक्ति एतय चरितार्थ होइछ जे—'यथैव रोचते ह्यस्मै तथा विश्वं प्रवर्तते'।

एहिमे नायक छथि गौत्रप्रवर्तक पराशर, जे 'कलौ पाराशराः स्मृताः कलिक हेतु मान्य शास्त्रीय संविधानकार मानल जाइत छथि। हुनक सन्तति परम्पराक प्रशस्तिमे कहल गेल अछि–'पराशरात्मजं वन्दे शुक-तातं तपो निधिम्' 'व्यासं वसिष्ठ नप्तारम्' आदि। कवि एहन व्यक्तित्वकें प्रासंगिक रूपें उपस्थित कय तद्युगीन अनेक चारू चरित्र कें एतय चित्रित कय, अपन बिचारधारा हुनकहिं मुहें सुनौलनि अछि। उपसंहारक पराशरीय किंवा लेखककीय सुझि पड़ैछ जे एकाकार भए गेल अछि। बुझि पड़ैछ, पराशरक कंठसँ किरणजी स्वयं उपसंहारमे जयकार कऽ रहल होथि–

"जेना धरतीपर दृश्य जलसँ
बहुत अधिक जल धरतीक पेटमे छैक
तहिना मनुष्यक सुन्दरता
चामक भितरेमे अछि रहैत
सत्यवतीक बुद्धि व्यवहार चातुरीसँ हैत ज्ञात।
कोइलेमे अछि हीरा रहैत,
नहि चानी-सोनक पहाड़मे।
जय शान्तनु सत्यवतीक संगम
संजात जीवन प्रवाह
जय त्यागवीर विशाल मना देवव्रत
जय गतिशील विचार।

एतय कवि एवं कथा-पात्रक वाणी जेना एकाकार भऽ गल हो। द्वापरी ॠषिक संवदेनशीलता जेना वर्तमान युगक कविपुंगवक वाक्सा-धनामे सार्थकता पाबि गेल हो।

काव्यांचित रस अन्विष्य हो तँ पराशरक अंकुरित-पल्लवित रतिपिपासामे, शान्तनुक पूर्वानुराग विरह रागमे व्यंजित अछि। तहिना देवव्रतमे वीरत्व, यमुना, गाङो एवं जीवछक उक्ति प्रत्युक्तिमे हास-विस्मय-घृणा-क्रोध आदि विविध रस-उपादान आभासित अछि। जन-कल्याणक संगममे शान्त रस अग्रिम रूपेँ प्रतिपादित अछि।

भाषा-प्रयोगमे किरणजी तत्सम-तद्भवसँ बढ़ि ठेठ मैथिलीक शब्द शृंखला सजयबामे, स्थानीय उपमानक योजनामे एवं प्रचलित वाग्धारा प्रवाहित करबामे सुविदित आवेशी छथि। संस्कृत-प्राकृत-अवहट्ट हुक शब्दावली केँ चिकनाय, श्रुतिसुखद एवं उच्चारणसुलभ बनाय तथा लुप्तमान देशज शब्दकेँ प्रचुर रूपेँ प्रयोग कयने छथि। एकर शब्दचयन, वाग्धारा विनु विशेष विवरणहु कहि देत जे एकर शिल्पी किरणे जी छथि, वैह भऽ सकैत छथि।

एहि काव्यक सर्वाधिक बिशेषता अछि, सर्वहारा ओ उपेक्षित-तिरस्कृत समाजक चेतनाक उद्दीपना। निःसन्देह कविक लक्ष्य वहुत किछु एहि दिशामे प्रशस्ति पौलक अछि। किरणजीक व्यक्तित्वक छाप

हुनक कृतिपर, कृतित्वपर-'पदे पदांशे वाक्येऽर्थे सभ पर अमित रूपें अंकित टंकित अछि।

'पराशर'क कथा-सूत्र

सोड़ह संख्यामे विभाजित सर्ग-सर्जनाथ अंश-अंश विषयानुसार नामांकित अछि, जे कथा-वस्तुकें स्पष्ट करैत चलैछ। यथा—

१. 'सत्य ज्ञान'—एहिमे पूजा हेतु पुष्प-पत्र लोढ़ैत पराशरक पैरमे सहसा गहुमन लेपटा जाइत छनि आ तत्काले हुनक प्राणरक्षार्थं एक अन्य अन्त्यज अपन शरसँ सापकें बेधि मुनिकें बचा लैछ। कृतज्ञ मुनिकें मानवताक मूल्यांकनक सत्य ज्ञान सहजहिं उपलब्ध होइछ।

२ ऋचापाठ-पराशरक आश्रममे विभिन्न ऋषि एवं स्वयं ओ अपनहु जे ऋचापाठ करैत छथि ओहिमे शोषक-शोषित, रंगभेद आदिक परिहारक भाव योजित होइछ। नारीक प्रति नरक निष्ठुरतामे, सीता निर्वासनक चर्चामेवसिष्ठक कट्टरता कल्पित होइछ।

३. 'वनकबाट' मे वन-वनस्पति, पशु-पक्षी अजीव-सजीव सभक आनुसन्धानिक परिचय वनवासी लोकनिक बीचसँ प्राप्त करैत पराशर एक वनवासिनी वृद्धाक सामाजिक विश्लेषण सँ चमत्कृत रहि जाइत छथि।

४. 'पराशरक नव अनुभूति' —मे मुनि पराशरकें जीवछ मलाहक बेटीक रूपसँ मुग्ध भए ओतय पहुँचला पर विश्वामित्र चरित्रक लोकगाथा सुनैत, नव अर्थ-नव अनुभूति-भेटैत छनि।

५ जीबछक जीवन —श्रमिक वर्गक सहज ओ विलक्षण चित्रण, पत्नी यमुनाक संग उच्चवर्ग-निम्नवर्ग ओकर नर-नारीक सम्बन्धपर तथ्य कथ्यसँ वर्ग भेदक यथार्थता व्यक्त होइछ।

६ 'जीवछ-गाङो'—शीर्षक में बाप-बेटीक बीच वार्तालाप मे पराशरक संग संबंध लेल ऊँच-नीचक विषमतापर टिप्पणी 'टिपिकल' अछि। बेटी सँ मुनिक संग व्यवहारक अभिनयशिक्षा देब सेहो चोटगर-चहटगर अछि।

७ 'पराशर ओ जीवछक नीति खेल'—सँ दूहूक बीच दाव-पेंचक खेल, कूटनीतिक निदर्शन नीक जकाँ प्रदर्शित होइछ।

८ 'पराशर-गाङोक परिणय'—गंगा यमुनाक प्रयाग संगम जकाँ दूहूक

बेमेल मेल रहितहुँ, गाङोक उक्तिमे मुनिकेँ जे सत्य भेटैछ ताहिसँ हुनका 'सत्यवती' नामेँ संबोधित करैत छथि ।

९ 'व्यासक उत्पति' - सौन्दर्य भूमिमे वैचारिक औदार्य-बीज कोना अंकुरिता होइछ तकर सिद्धि जेना व्यासक उत्पतिमे निहित हो ।

१० 'विवाहकथा व्याहार'—स्वयं पराशर द्वारा विवाहक कथा व्याहृत होइछ । प्रावसनी नारी मूक नहि, वाग्वैभवमे तर्कशालिनी होइत छलि-कोनो आधुनिकाकेँ पाछाँ कऽ सकैत छलि से प्रतिपादित अछि ।

११ 'व्यासक पैत्रिक गमन' - पुत्र व्यासक संग निःसंग पराशरक आश्रम प्रत्यावर्त्तन सँ पुनः शान्तनुक प्रेम-विवाहक चर्चा उठैछ । औरस पुत्रकेँ राज्यभागी बनयवाक शर्त रखबाक मुनि द्वारा कन्यापक्षकेँ परामर्श भेटैछ ।

१२-१३- 'गाङोक प्रति शान्तनुक प्रेम प्रस्ताव'—ओ 'शान्तनुक विरह' नामानुकूल वर्णित अछि ।

१४ 'बूढ़ा मन्त्री ओ भीष्म'— सहृदय कुमार देवव्रतक चित्रण, बूढ़ा मन्त्रीक संगः वार्तालाप चलैछ । ताही क्रमेँ कवि-गोष्ठीक रोचक आयोजन होइछ । जाहिमे कवितापाठ सोद्देश्य, प्रेरणादायक, कवि हृदयक दर्पण स्वरुप पाठक केँ स्वयं प्रतिभासित होइछ !

१५-१६ 'गाङोक हास्तिनापुर गमन'—तथा 'सिंहासनपर सत्यवती' अन्तिम दू सर्ग योजित अछि । एहि दूहूमे माय-'यमुना द्वारा, देल गेल सीखमे तीरव ओ कोमल दूहू स्वर झंकृत अछि । अन्तमे सत्यवती रूपेँ राज्यसिंहासनक अधिकारिणी भए गाङोक तेजस्विनी रुप प्रतिष्ठित होइछ । काव्यक उपसंहार पुनः पराशर मुखेँ प्रमुख पात्र-घटनाक प्रशस्ति सँ इतिश्री होइछ ।

एहि प्रकारेँ सोड़ह सर्गमे पराशर महाकाव्य पूर्णता प्राप्त करैछ । एहिमे आधुनिकता, रूढ़ि परम्पराक प्रति विद्रोह भावना, एक नव समाजक संगठनक कवि-कल्पना तेना भऽ कऽ नियोजित अछि जे ई सिद्ध करबामे ननु-नच नहि रहि जाइछ जे किरणजीक कृति-कृतित्वमे माइकेलक मुक्ता, नजरुलक विद्रोह, राहुलक रूढिभंजना, अज्ञेयक रहस्य भावना एवं उग्रक तीक्ष्णताक संगहि ठेठ भाषाक प्रयोगमे कविवर सीताराम झाक वाक्प्रवाह सभ एकाकार अछि ।

ई अपना सन अपनहि छथि--'सागरः सागरोपमः' अनन्वयक-उदाहरणे छथि। शिवकाञ्चीवाला हिनका भने शिव कहथु, विष्णुकाञ्चीवाला भने विष्णु मानथु किन्तु काञ्चीनाथ काञ्चीनाथे छथि। किरण किरणे छथि हिनक किरण बिकिरणमे हीरो चमकत, कोईलो दमकत जँ ओकरा चमकमे किछु धार छैक, दमकमे किछु उपयोगी व्यवहार छैक।

'किरणक प्रतिभा-किरणक कण-कणमे जे तेज-ओज अछि विध्वंसे नहि नव सृष्टिक जे इष्टदृष्टि अछि से आन तथाकथित बहुतो नवतावादी, जनवादी, प्रगतिवादी, प्रयोगवादी नामान्वित कविलोकनिकेँ बहुत पाछाँ छोड़ि बढ़ि जाइत छथि। भने हिनका समीक्षात्मक उपेक्षा भेंटल होइन परंच हिनक अपेक्षा विकास-पथक पथिककेँ रहिते अयलैक-रहबे करतैक।

एहन महान साधक साहित्यतपस्वीक प्रति श्रद्धा सुमन चढ़यबालेल हृदय उमड़ि अबैछ। किन्तु तदुपयुक्त क्षणो नहि, प्रतिभा-कणो नहि, तेँ मौन-मौन हिनक अर्चनामे, हिनकहि शब्दमे गुनगुना रहल छीः— कृतिक कृतीकेँ आरम्भिक हिमगिरि-वन्दनाक पद सुना रहल छी जे कृति ओ कृतीक लेल, वन्दय ओ वन्दनाकारक लेल, एकीभावक सर्वथा उपयुक्त प्रतीत होइछ—

"जय जय पर्वतराज हिमालय !
तोहरे देहक कण-कण सँ अछि
बनल हमर सभक देश
कोसी कनकइ कमला गंडक गंगा द्वारा
सनेस जकाँ पठा माटि
एकरा छह पुष्ट करैत
अपन शरीरक धाम सदृश हिमजलसँ छह पटबैत !
पुनि कहिओ कहिओ तमसैल जकाँ
भूकम्प मचा ध्वंसो छह कऽ दैत !
तेँ तीरभुक्ति मिथिलाक थिकह तोँ
ब्रह्मा-विष्णु-महेश।"

...सुरेन्द्र झा 'सुमन'

मैथिली मन्दिर, दरभंगा
आश्विन शुक्ला पंचमी, १९८८

सत्यक ज्ञान

"जय जननी माता जय जनक पिता परमेश हमर
जनिकर मानवीय मधुर इच्छें भेल हमर
उत्पत्ति, जनम
पौलहुँ शरीर, चेतना पुंज,कार्यक्षम, अनुभूतिशील
चिन्तनक सिन्धु, कल्पना-कानन ।
मनक बात कहबाक लेल देलनिवाणी
संग-संग ।
पोसि-पालि समरथ बनाय देलनि स्वतंत्र
व्यक्तित्व
जय जय धरती मानव जीवन केर आधार
प्राण
जय जय अनिल, सलिल, जय सूर्य-चान
जय आसमान ।
जय जय पर्वतराज हिमालय,तोहरे देहक
कण-कण सँ अछि बनल हमर सभक
ई देश ।
कोशी, कनकइ, कमला, गंडक, गंगा
द्वारा सनेस जकाँ पठा माटि
एकरा छह पुष्ट केरैत
अपन शरीरक घाम सदृश हिमजल सँ
छह पटबैत
पुनि कहियो-कहियो तमसैल
जकाँ भूकम्प मचा ध्वंसो छह
क' दैत,

तेँ तीरभुक्ति-मिथिलाक थिकह तोँ
ब्रह्मा- बिष्णु-महेश ।

× × × ×

मिथिला-मही केर आङनक बनि उतरबरिया
टाट,
ठाढ़ अछि दिन-राति नगपति छेकि
मेघक बाट
तैं ने अबितहिँ जेठ होइछ वर्षा
हेठ ।
जखन अवधक चानिपर बरिसैछ
दिनकर आगि
व्रजभूमि मथुरा नगर गोकुल मे
नचै अछि लू
मिथिलाक आङन मे खेलाइछ
मेघ कारी श्याम
नयनाभिराम ललाम ल' सन्देश पाकल
आम ।
अन्ने सँ ई देह बनल अछि
अन्ने करैत अछि पुष्ट
अन्ने दै अछि शक्ति देह मे
देहक काजे थिक प्राण-प्रमाण
अन्ने थिक प्राण, अन्न थिक भगवान ॥
करू परिश्रम धरती कोड़
अन्न खूब उपजाउ
बर्षा-पानि घेड़ि क' राखू
पौटी विरचि पठाउ ।
प्रकृतिक संग लड़बे थिक पौरुष

से बुझि डेग बढ़ाउ ।
जन्मक संगहि जंग भेटै छइ
आजीवन संग चलैछ
जंगक अन्ते मरण कहाबय
तेँ मरण सँ बुझनुक न अछि डराइत ।
ज्ञान, बुद्धि, श्रम, साहस, संयम
धैरज-थैरज लगन विवेक
अरजि सकल गुण जे अनलस जन
काज करै अछि तकरा संगे
पोसा पशु सम चलय सफलता
सबतरि सब दिन, मानू सत्य सनेस ।
कलम, कोदारि,कुड़हड़ि कचिया
ओ तीर-धनुष तरुआरि
सब केँ बना सहोदर पोसी
बस मे राखि सम्हारि ।
मान प्राण रक्षाक हेतु टा
मानव पर अस्त्र चलाबी
बुझय स्वजन मानव केँ मानव
से जन-जन केँ पाठ पढ़ाबी ।
प्रगतिशील ऋषि रचित ऋचा केँ
मधुर स्वरेँ गाबैत
पराशर निज आश्रम उपवन मे
बाम हाथ सँ साजीक संगहि
छला नवौने डारि
आ' घाड़ उटाक' दहिन हाथ सँ
गाछक निश्छल हास सदृश
फलकल-फलकल फूल तोड़ि
साजी मे राखैत ।

पुरुषार्थ

तहिखन बुझि पड़लनि जे पैर पर
"चिक्कन चाबुक अछि बजरल ।

चौंकि छरपि दूर जा
ताकल पाछाँ घूरि
देखल विस्मित होइत
तीर सँ बेधल फण अजोध गहुमन
छल छटपटाइत, शोणित बोकरैत ।"

"के सदय हृदय मानव कयलक अचूक
प्रहार
यमक समान एहि दराध पर"?
उठल प्रश्न पराशरक मन मे ।

आश्रमक बाहर सँ उत्तर आयल-
"मुनि जी ! ई साँप अहाँ केँ काटि लैत
अहाँ रही गीत गाबैत फूल तोड़ैत मगन मन
ई साँप फना उठौने अहाँ पर चोट करै ले
छल तैयार,
हाथो भरि नहि रहय दूर
हमर नजरि पड़ल तँ
हमहीं चला देलिअइ तीर
से केलिअइ ठीक कि ने ?

"वाह बहादुर ! तोहीं सब बचौलें प्राण हमर
मस्त रहै जो" बहरैल
पराशरक मुँह सँ आशिर्वाद वचन ।

ओ जंगल वासी नेना सभ
जनि पौलक अनमोल रतन—
"मुनि जी कहलनि वाह बहादुर मस्त रहै जो"
गाबैम, कुदैत, फानैत, छरपैत चल गेल ।

विवेकी विद्वान पराशरक हृदय मे प्रश्न
पर प्रश्नक उठलनि बिड़रो
सन बिहाड़ि ।
"कुकुरो-गिदर चल अबैत अछि आलय मे
नहि बुझैत अछि हमरा पूज्य श्रेष्ठ ।
ई जंगली जन रहैत अछि आश्रम सँ
दूर हटल
से किएक ?
एकरा सब केँ कुकुर गिदर सँ छइ
विशेष ज्ञान विवेक तेँ किने ?
विशेष ज्ञानक पुरस्कार मे
हम सभ दैत छिऐक दुत्कार फटकार ।
कुकुरो गिदर सँ बदतर मानैत छिऐक
तखन किएक ओ मारि साँप के
बचौलक प्राण हमर
की कोनो धर्म विशेष हमर ओकर शोणित
मे अछि विद्यमान ?
अहंकारवस हमर शोणितक ओ धर्म अछि
मरि गेल ?
अहंकार रहित ओकर सबहक शोणित मे छै
जीवन्त ?
खोजब अछि ओ धर्म ।
पढ़बाक अर्थें थिक सत्यक अन्वेषण-उन्मेषण
की जकरा कहै छिऐक राक्षस, भूत, पिशाच
आदि मानव सँ भिन्न जन्तु
सेहो मानवेक थिक भेद ?
पराशर रहलाह तर्क वितर्क मे बाझल

धरती रहल अपन धूरी पर घुमैत
सूर्य पहुँचलाह माथ पर
साजीक फूल मरूऐल
नहि गेलनि ध्यान
मुदा जखन पेट मे देलकनि खौंत
तँ घुरलाह कुटी दिस।

ऋचा पाठ

जनरव कलरव भेल शान्त
नील गगन मे नक्षत्रक व्यक्तित्व छल सुस्पष्ट भेल
घूड़क धूआँ सँ पड़ैल माँछी, मच्छड़, बहिरी डाँस-ताँस
आश्रमक पशु स्थिर भ' बैसि छल पाजु करैत।
पराशर मुनि, स्वस्थ, प्रसन्न मन
बैसि कुशासन पर कहल शिष्य गण केँ,
"आब सुनबैत जाउ अपन-अपन
चिन्तन अनुभूतिक ऋचा मधुर।
चिन्तन अनुभूति केँ लिखि राखब थिक आवश्यक
केओ ओकरा पढ़त करत मनन
अपन चिन्तन अनुभूतिक संग करत मिलान
संशोधन परिवर्तनक देत संकेत
एहि सँ ज्ञानक हैत विकास।
की अछि ने हमर विचार हितकर ?
तँ सुनबैत जाउ अपन अपन ऋचा
सुमधुर स्वर मे गाबि-गाबि।
होअओ जंगल-मंगलमय सारस्वत मधुक सिंचन सँ।
वयसें सबसँ छोट ऋषि उठलाह
"दिग्विजयी राजा सन दिनकर

निर्बाध धरा केँ सोखि चूसि, बरिसाय आगिकण
पहुँचलाह पश्चिम क्षितिजक किनार मे,
लाल वर्ण निस्तेज ।

जग केँ जनि सिखबैत-
"दिग्विजयी राजा
अछि रहैत मानवक शोणित मे नहैल
प्रभुता प्रतापक बल सँ चमकैत रहैछ
भय सँ लोक ओकर कृत्य केँ नहि अछि देखैत
शक्तिक घटने निखरै छै असली रुप रंग ।
तेँ राजाक विजय केर प्रशंसा मे काव्य रचब थिक
मनु संतानक संहार कार्य मे देब प्रोत्साहन,
तेँ निन्दनीय ।

'साधु-साधु' उद्गार जकाँ बहरैल
पराशरक मुख सँ ।
उठला दोसर ऋषि कवि--
"गायक वर्ण छइ होइत कैल, हाँसा,
गहुमना, चरक, सिलेब, कारी, गोल चितकाबर
तामसन लाल
परंच सबथिक गाय समान रुप सँ
आदर स्नेहक बेर मे ।
रंगक कारण दूध-दही-घी पोषकता मे
अन्तर नहि छइ होइत ।
रंग थिक प्रकृतिक देल, दिनकर किरणक खेल ।
वाह ! वर्णक विषय मे वैज्ञानिक दृष्टि, विलक्षण बात
कहल पराशर स्नेहिल स्वर मे ।
तेसर ऋषि--"तीन दिन सँ खाइत छी उसिनल,
सुथनी-तेकुना, पेँची अनोन

देह करैए हक-हक, लागत कोना मोन
भरले पेटें ने गीत-पिरीत"।
असल यथार्थवादी कविता थिक अहाँक
कहल पराशर हँसैत।
चारिम ऋषि लगलाह पढ़य जोर सँ--
"नहि चाहैत छी सौख्य, सान, सम्पत्ति न प्रभुता
नहि वैभव, बलजात ख्याति
कीर्ति वा यशक महत्ता,
उचित सत्य कहबाक चेतना साहस
बनल रहय जीवन भरि, चल जाय वरु सरवस।
स्वाभिमान रक्षार्थ सन्नद्ध रहय मन सदिखन,
पबितहुँ कष्ट अपार, बौआइत वन-वन।
अत्याचार, अन्यायक संग जग मे बीतय जीवन
रूढ़ि अन्धविश्वासक कट्टर दुश्मन, मानय सब जन।
वाह-वाह, कहल पराशर प्रमुदित मन,
आजुक दिन अछि बड़ पुनीत-प्रियगर
अहाँ सभ यथाक्रम गाबैत पढ़ैत जाउ
हम छी ध्यानपूर्वक सुनैत
कहि मुनि ओठङि गेलाह गाछ मे।
प्रोत्साहन वाक्य मुनि के न लगा दैत अछि जान,
प्रोत्साहन, स्वीकृति सँ झोस बढ़ब थिक स्वाभाविक।
नव ऋषिगण अनुशासित रुपें अपन अपन
ऋचा पाठ सँ आश्रम कें लगलाह करय आमोदित।
१. "जनम सँ मरण धरि बाटेक नाम छी जीवन,
बाटक अन्त धरि सब के पहुँचय पड़त,
तें सब लोक छी सहयात्री सङ्बे,
सङ्बे कें स्नेह सहयोग दैत बढ़ैत चलू

बाट आनन्दपूर्वक कटि जायत।"
"मधुमय कबिता अछि" कहलनि मुनि।
२. राति सँ दिन, दिन सँ राति,
दूनू परिवर्त्तनक काल मे,
आकाश दिशा होइत अछि
शोणित समान लाल।
राति दिन नित्य अछि होइत
तेँ नहि जाइत अछि ध्यान।
मुदा ई थिक परिवर्तन महान
जकरा कहैत छिऐ क्रान्ति।
क्रान्तिक रंग थिक लाल शोणित सन लाल।"
"विलक्षण चिन्तन" कहल पराशर
विस्मित सन होइत।
"हमर ऋचा अछि कनेक पैघ
करिऐक पाठ गुरुवर" कहल अंतिम ऋषि धखाइत
"हँ-हँ" उत्तर पाबि उत्साहित भ' लगलाह करय पाठ--
"मिथिलेशक पालित, अज्ञात कुलक कन्या सीताक
अवधेशक जेठ बालक रामक संग विवाह केँ
सकल साधारण लोक मानलक,
कट्टरता पर गतिशील विचारक विजय रूप मे।
तेँ मिथिला सँ अवध धरिक लोक
भेल रहथ आनन्दित,
विवाहक कयलक सभ अभिनन्दन।
मुदा बैसि नहि सकलाह राम
सीताक संग सिंहासन पर,
जाहि दिन होइतनि अभिषेक,
तही दिन भेटलनि जंगल वास,

चौदह वर्षक लेल ।
राम रहथि महापुरुष, सीता धरतीक बेटी
कष्टमय जीवनक शोणित छल बहैत हुनक तन मे
जंगल विदेश बासक व्यथा सहि,
घुर अयलाह अयोध्या चौदह वर्ष बिताय ।
संयोग सँ भेटल छलनि भरत सनक उदार भाय,
बैसलाह सिंहासन पर सीताक संग
जन-जन मे छल उल्लास, उमंग ओ दृश्य देखि ।
सीता कें भेल योग्यता कल्याणक
दशम मास आबि तुलैल
अवधक गद्दी केर अधिकारी
राम सीताक पुत्रक अवतरण क्षण छल आसन्न ।
घड़ी पहर दिन दुई चारिक मात्र छल देर,
राजमाता कौशिल्याक रनिवास,
उल्लास-हास-परिहासक सागर जकाँ रहय लगैत ।
कोबर सन नयनाभिराम रहय बनल,
सोइरीक घर ।
मिथिला सँ दगरिन, गाइनि छलि पहुँचलि,
अवधक पहिनहि सँ छल तैनात ।
नूआक रंग-ढंगे सँ
मिथिला-अवधक टीम भिन्ने छल बुझा पड़ैत ।
डहकन परिहासक उतराचौरी
मैच जकाँ रहय चलैत ।
मैथिली सीता छली अपन विनोद भवन मे
करैत आराम ।
लच-लच करैत पलंग,
गुज-गुज करैत तोसक,

दूध जकाँ उधिआइत उलेँच पर
तीन तकिया सँ घेड़लि, सीता !
गर्भक भारेँ जनि अकसक करैत रहथि पड़लि।
सह-सह करैत सहचरी सब छलि बेहाल,
सीताक मन रंजन करबाक लेल।
केओ पैरक आङुर फोड़ि नहुँ-नहुँ जातैत
केओ कपार परक लकटल लटकेँ सरिआबैत
केओ बियनि नचबैत, गुनगुनाक सोहर गाबैत।
सीता, सोहरक भास सुनि मुसकिआइत,
गाल पर मारल मधुर चाट।
तही खन पहुँचलाह राजा राम प्रसन्न मन।
सीताक सिरमा मे गेलाह बैसि,
आ पुछलनि मनक कुशल-क्षेम !
सीता हँसि रहलीह पेट हँसोथैत।
"गुरु वशिष्ठ केर आज्ञा सँ कयलहुँ अछि,
मानसिक संकल्प अश्वमेध यज्ञ करबाक
शास्त्रीय विधि सँ तँ अहाँक संग करब,
से किछु दिनक बादे भय सकत।
इएह शुभ-सुन्दर-सुखद समाचार
कहबाक लेल सोझे छी चल आयल"
राम कहलनि सीता केँ निधोख।
सीता रहि गेलीह चुप्पे'
रामक मुँह तकैत बकर-बकर।
सीताक मौन उदास भाव, राजा राम केँ
लगलनि अनसोहाँत।
बजलाह उखड़ल सन स्वर मे
"एहन शुभ सुन्दर समाचार पर अहाँक उदास भाव

विस्मित अछि हमरा करैत ।
सीता कहुना उठि बैसि कहलनि--
"महाराज ! अश्वमेघ यज्ञ सँ पहिने
विश्व विजय करय पड़त ?"
"हँ हँ ! सैह आब अछि कोन कठिन"।
बजलाह राम उत्साहित स्वर मे ।
सीता पुनि कहलनि--
महाराज, मनु छथि कहने,
स्वाधीनता थिक सुखमय,
पराधीनता कष्टमय अपार सागर सम,
तेँ विश्व विजयक अर्थ थीक,
संसारक मानव समूहक सब सुखक अपहरण,
सबकेँ दुःखमय बना देब ।
से कोना पुण्यप्रद भय सकैछ ?
महाराज ! हम छलहुँ माटि पर फेकलि
भूख पियासेँ लहालोट होइत
महामना मिथिलेश जनक बुझलनि
हमरो तन मे अपने पूर्वज मनूक शोणित बहैत,
तेँ ने लेलनि उटाय कोर मे
पोसलनि-पाललनि स्वजन सन्तान समान,
औरस बेटी केँ कात राखि, हमरे देलनि
अवधेशक उत्तराधिकारी अहाँक हाथ मे ।
हम ताही महापुरुषक कोर मे छी पोसलि ।
रामक मुख-आँखि छल होइत लाल ।
"जन-धन-बल सामर्थ्यक अहंकारे ने रहैछ
अश्वमेघ सन यज्ञक जड़ि मे ।
अहंकार स्वयं थिक महापाप,

पापसँ पुण्यक जन्म-तर्कहीन असंगत ।
विश्वे में अछि मिथिला देश हमर,
अहाँक घोड़ा निश्चय करत प्रवेश,
जे मैथिल देखत से बान्हि धरत,
राजा केँ नहि पुछय जेतनि
मिथिलाक लोक नहि थिकनि राजाक दास
स्वाधीनमना लोकक प्रतिनिधि थिकाह मिथिलेश,
अहाँ करबेक आक्रमण ।
मिथिला भ' जैत पुरुषहीन, तखने ने अहाँक जीत ?
पति-पुत्र विहीना नारीक नोर सँ ।
मिथिलाक भूमि हैत पाँक-हेँक ।
फोड़ल लहठीक लागत ढेर-पहाड़,
माङक सिन्दूर सँ पोखरि-झाँखड़ि हैत लाल,
कन्नारोहट सँ भरत मिथिलाक भू, नभ, दिगन्त,
सोहर, कोबर, बटगबनी, लगनी, मलार, रास,
संगीतक सब राग-भास
मरि लुप्त हैत ।
तखन हम सम्राज्ञी कहैब ?
अहाँक यज्ञ संगिनी हैब
एहि सँ पहिनहि हमरा दिअ मारि ।"
श्याम वर्ण रामक मुख भेल ताम्र वर्ण,
तामसेँ तम-तम करैत बजलाह –
"गुरुक आदेशक आलोचना
यज्ञ-धर्मक आलोचना, विरोध,
थिक राजद्रोह, राजधर्म द्रोह ।
जकर दण्ड छै होइत मृत्यु वा निर्वासिन ।

अहाँ छी नारी तें निर्वासनक दंड छी दैत,
केओ काल्हि जनकपुर देताह पहुँचाय
कहि उठि गेलाह राजा राम।
"नहि नहि, हम नहि जैब जनकपुर,
मुनि बालमीकिक आश्रम जाय रहब,
मुनिक आश्रम पर नहि कोनो राजाक
अधिकार अछि रहैत।
हम एखनहि विदा हैब।
शूली पर चढ़ैब वा फाँसी पर लटकैब,
थिक राजाक काज,
तहिना निर्वासन मे, देशक सीमा सँ बाहर क'
ओकरा उचित स्थान पर पहुँचा देबो
राजाएक कर्त्तव्य थिकैक।
रथ मंगौल जाय।"
जानकी गहना उतारि रामक लग मे देलनि राखि।
राम जानकीक बिच वैमनस्यक बात सूनि,
आबि गेल छलाह भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न तीनू भाय।
राम ताकल भरतक मुख।
"हमरा तँ अवधोक राज, बुझि पड़ल
बड़का घेव समान, अनर्थक भार।
भौजीक कथन मे मानवताक सहज स्वरूप अछि देखि पड़ैत,
अपन आत्माक विरुद्ध ककरो आज्ञा पालनक
अभ्यास कहाँ छी कयने ?
अयोध्याक राज करबाक लेल कहल,
अहाँक आज्ञा तक हम नहि मानल।"
राम तखन लक्ष्मण मुख ताकल आँखि गुड़ारि।

लक्ष्मण सीता केँ रथ पर चढ़ितहिं,
रथ हाँकी देल ।
अहंकार-मद मातल राजा राम,
हृदयहीन पाथरक प्रतिमा जकाँ रहलाह ठाढ़ ।
गतिशील ओ स्थावर वस्तु मे
सह अस्तित्वक समझौता अछि भ' सकैत,
मुदा गतिशील ओ जड़वादी विचार मे,
सह अस्तित्वक संधिक कल्पने थिक मूर्खता ।
अवधक सिंहासनक उत्तराधिकारी
सीताक पुत्रक जन्मक पश्चात होइत असंभव,
तेँ प्रसव काल केँ देखि चलौने छलाह,
अन्तिम तीर कट्टरपनाक मूर्त्ति,
वशिष्ठ मुनि-जे रहल सफल ।
यैह थिक सीताक निर्वासनक रहस्य,
आन कथा जे अछि प्रचलित,
छी देल असली पर आवरण मात्र
मात्र सत्तातंत्रक प्रचारक परिणाम ।
कवि ऋषि केँ चुप पाबि कहल पराशर—
"अद्भुत मौलिक चिन्तन अहाँ सुनौल
वाह ! तुष्ट तृप्त अछि भ' गेल हमर मन ।"
"गतिशील विचार ओ जड़वादीक
बीच सहअस्तित्वक कल्पनो थिक मूर्खता ।"
वाह आयुष्मान हउ सौम्य ।
आयुष्मान हउ सौम्य
कहैत उठलाह पराशर
सब केँ आशिष दैत ।

बनक बाट

प्रयोग परंपराक सम्यक सहयोगक रुचिर परिणामक प्रतीक,
मानव समूह में निहित-सहज शक्तिक परिचायक
छल बनक खुड़ुर बाट।
बिनु कोदारि खुरपीक अद्भुत चिक्कन
जनि हो रन्ना चलौल
तरबा मे गुदगुदी लगबैत।
मोटगर, मजगूत कष्टप्रद कँटाह गाछ
पड़ितहि दिशा बदलल,
लक्ष्य पर पहुँचब थिक इष्ट।
मोछक लड़ाई मे शक्ति गमैब थिक
अनुचित, अज्ञता,
से ध्वनि बिहीन वाणी मे छल कहैत।
पराशर गाछ-वृक्ष, पशु-पक्षी कीट फतिंगाक
आकृति प्रकृतिक जनि अध्यन करैत,
मन्द गतिएँ छलाह बढ़ल जाइत।
तुक मलंगा, तुलसी, बड़ियार, चिरचिरी, चकोढ़
सब घौदा मौदा भ' जनमल लहलहाइत।
मेहदी, जकर फूल सँ बनल अतर
लगा देह मे धनवान कहाबय रईस सौखीन
जकर पात कें तरुणी रमणीगण ऐहब-सुहब
पीसि प्रेम सँ, रचि रचि रङैत छथि हाथ,
आषाढ़ सँ आसिन धरि,
स्वामी सन्तति भाय वन्धु धन धान्य
सौभाग्यक कामनाक रूप मे,

से, कँटैल मेनहरक संग संगी जकाँ छल ठाढ़।
चिक्कन तन्नुक तन गुलेंच,
जकर पातक सुन्दरता, फूलक सौरभें
मुग्ध मन बुध जन दरवाजा पर रोपै छथि सस्नेह
तकरा गछारने छल कबाछु।
डाँट, पात, पत्ती गतर गतर मे काँट भरल
अणारि छल जनु चितंग पड़ल
आ कोरा मे मधुमती मालती फुलैल रहय लतड़ल।
जेना मैथिल ब्राह्मण समाज बिच
जाति-पाँजिक जादुक युग मे बूढ़ बिरूप
दुर्दुट वरक कोर मे विवसा गुणमयी कन्या
छलि हँसैत।
उरकुस्सी दबने छल कदम्ब केँ।
पशुक हेतु पकमान रूप मखमल सन मोलैम
नयनाभिरास रंग, हरियर कचोर,
भरि भरि ठेहुनक अपुआङ, जोभक झाङड़ चतार
पलसल ओलरल,
जकरा देखि धेनु गाय-महिसिक हुलसि उठय मन
जँ चरि पाबय हिय भरि तँ कहिया-चपैभरि
क दैछ मस्त दुहियाक लोन,
तकरा एक मूस व्यर्थे काटि काटि
खुरलुच्ची नेना जकाँ छल प्रसन्न होइत।
भूआ, जे देह मे भिड़ितहि लोक केँ कुड़िऐनी
सँ क' दैए तबाह
तकरा लाबा जकाँ छल खाइत धनेस।
सजमनिया, पाकल महोर तूति जकाँ
पिलुआ केँ छल चोभि चोभि खेने जाइत।
नयनाभिराम सुन्दर सरोवरी, बैसल छल चुपचाप

जनि हो तमाशा देखैत ।
तकरा विरूप बाझ छनभरि मे नोचि पटकि उड़ि
गेल गाछ पर ।
बेचारा भूखल बेङ एक छल पिलुआक ताक मे
पाछाँ सँ साप पकड़ि लेलकैक टाङ
किकया उठल बेङ, उठौलक फण साँप
गर्व सँ बढ़ल बीहरि दिस मुदा सपनौर
आबि चापि देलकैक कंठ ।
आयल एक रमना-सागर सन असीम
अगणित गाय बकरी भेंड़ी छल चरैत ।
रमनाक कात मे साहड़, सनिपतकतऽर मे नेना अनेक
छक्का बित्ता, कौआ ठुट्ठी, बाघ गोटी, धुरा-माटी
काग-दोस, गंगासागर, सिंगही मङुरी, उड्डी-गुड्डी,
भेंड़ा-महिसा, करिया झुम्मरि सन मन मसिन्द खेल मे
रहय मगन ।
बीच मे उतरा चौरी, मुक्का-मुक्की, पटकम पटका
नाटकक अंग जकाँ आबि जाइक ।
एक टेल्हगर छौंड़ा हँसैत चिकरल जोर सँ,
"ढेहैत-ढेहैत" ।
किछुए छन मे पहुँचल अनेक साँढ़ चिकरैत-ढेकरैत ।
जेना "बीझौ" शब्द सुनि धड़फड़ाइत छथि पहुँचैत
नोथारी-जयवारी महाभोज मे ।
करिया साँढ़ कैली गाय मे लागि गेल,
कैला धेलक करिकीक पछोड़
ने साँढ़े तकलक गायक रंग ने गाये रंग देखि
कयलक विरोध ।
पराशर सब दृश्य सावधान भय देखैत जनि
प्रकृतिक सृष्टिक रहस्य पढ़बाक लेल छलाह चलल ।

दिनकर पहुँचलाह शिषर पर, रौद भेल तीख
चानि पर जनि छल खसैत आगिक कण ।
देखितहिँ पाकड़िक गाछ झमटगर
रहलाह बैसि अड्पोछा ओछाय ।
स्पेकबा सँ बुढ़िया एक वहरैलि हाथ मे लेने
दू नारिकेर काँच खोइचा छोड़ौल
नबे कड़चीक सुल्का बनौल पहुँचलि ।
माथ झुका परनाम कहैत लग मे देलकनि राखि ।
बाजलि—"मुनि जी ! ई गाछ छिकै भरि टोलक
बैठका-दलान ।
अहाँ आउर हमर छुअल पानि सँ लधिओ नइ
छिअइ करैत ।
मुदा दूरा पर भूखल-पियासल रहतइ लोक
त अपन कण्ठ मे धसतइ कोना अन्न ?
अइ फल मे अपनइ भरि जाइ छइ पानि ।
से पानि तँ नइ छूतऽ बुझइ ?
पीबि लितिअइ तँ मोन देह ठंढाइत ।"
दूरहि सँ दूनू नारिकेर कड़चिक सुल्फा
आगू मे देलकनि राखि आ तारक पात सँ
हौंकय लगलनि ।
पराशर डाभक पानि पीबि पड़ि रहलाह
सुतलाह फोंफिया-फोंफिया भरि पोख ।
टुटलनि निन्न खोललनि आँखि ।
देखलनि बुढ़िया केँ पंखा हौंकैत
यंत्र समान ।
मन पड़ि एलथिन अपन माय ।
ठीक एहिना जऽर मे रहलि छलथिन भरि राति,
बैसल पंखा डोलबैत ।

"आइ हमर माय तोहर तन मे जनि छलि आबि गेलि"
कहि उठलाह पराशर ।
बुढ़िया बाजलि मधुर सुदृढ़ स्वर मे—
बाउ मुनि जी ! माय एकेटा छइ होइत,
जे सब मौगी मे छइ बसैत;
कारी रहौ कि गोरि
काया टा भिन्न भिन्न ।
मुनि जी, दिअ आशिर्वाद
एहिना भूखल प्यासल, थाकल, ठेहिऐल
लोकक सेवा करैत चलि जाइ जगत सँ
हम मनुखेक सेवा केँ मानैछी
सब सँ पैघ धरम ।"
अहाँक माय छली बाभनि
कयने हेबनि सराध अहाँ ।
दुधगरि गाय, छत्ता, जुत्ता, सोनाक मुरुत
बढ़ियाँ ओछौन उसरगि क' देने हेबनि संग
दगलाहा बच्छा पर चढ़ि, गेल हेती सरग ।
ओ सरगक सुख छाड़ि धरती पर किएक घुरि औती ?
सेहो पुनि अछोपक तन मे ?
मुनि जी ! हम अपनइ छी माय ।
बुढ़ियाक आँखिक कोसा लागल चमकय ।
पराशर अप्रतिभ भ' रहला ताकैत
ओकर आँखि ।

पराशरक नव अनुभूति

जीवछक दरवाजा परक गाछ तर पराशर
रहथि सुस्ताइत ।
दहिन हाथ मे दमगर कछार, बाम
कान्ह पर भरिगर बोआर लेने
गाङो रहय धफड़ि अबैत ।
माछक भारेँ लचकइ छलइ डाँण,
जाँघक गतिएँ दलकइत रहइ थन थल सरोज,
जनि जउबन नहि छल तन मे अँटैत,
तेँ छल उझकैत ।
गाछक तर अबितहिँ माछ केँ देलक पटकि ।
माछक रगड़ा सँ आँचर खसलइक ससरि ।
जेना दुष्ट मित्र छइ घसकि जाइत बेर पर ।
भ गेल ओकर छाती उघाड़;
गाङो रहलि ठाढ़ि हकमइत निर्विकार ।
पराशर देखलनि गाङोक तन,
अविधामूलक अर्थक समान, निर्निमेष ।
नहि जानि, कतेकाल धरि रहि जइतथि तकैत,
मुदा गाङोक आँखि सङ मिलि गेलनि आँखि,
लज्जित सन, उठि पकड़लनि बाट अपन ।
परंच मन नहि चललनि तनक संग ।
पैर रहलनि चलैत, मन रहलनि गाङो लग घुरिआइत ।
"एहि कन्याक कोखि सँ जे जन्म लेत से निश्चय
सबल, स्वस्थ, श्रमशील, साहसी हैत ।
ओह ! से पुनि जँ विवेकी, विद्वान होइत तँ

उपमा
मित्र

सोना मे सौरभ आबि जाइत"।
बाजि उठल हुनक अन्तर्मन।
मन पड़ि अयलनि गंगा-जमुना संगम थल
तीर्थ राज प्रयाग।
आँखि पर अयलनि वर्ण पर आधारित नियम-धरम
श्रम-साहस कारी तनमे टा बसैत।
आखर, वेद सब गोरक तन मे आरक्षित।
परिवर्तनशील परिस्थिति मे की ई कठोर नियम
हैत सहायक जीवन रण मे ?
अनेक प्रकारक चिन्तन मे डूबल मन पराशर
रहलाह बढ़ैत।
रौद पिरायल पुनि भेल ललोन,
जेना आगि सँ निखरय असली सोन।
सिन्दूरक बड़का गेन समान,
आकृति रंग धय, दिनकर गड़कि खसल
जनि क्षितिजक पार।
नहुँ-नहुँ अनहार भेल गाढ़।
तखन पराशर केँ घुरलनि होस-हवास।
पथ छलनि सुपरिचित तेँ नहि लगलनि ठेस चोट।
गामक रक्षक मानल जाइत गाम देवताक स्थान
छलनि पराशर केँ देखल।
जकर लगहि मे छल गामक दलान रूप
बडका टा बड़क गाछ।
नीचा छीलल, खड़रल अठवारे नीपल।
पराशर ततय जाय, संझा कालक जप तप क'
अड्पोछा ओछाय रहलाह सूति।
लगितहिँ आँखि, देखलनि सपना मे ओहे रूप।
कर मे कछार, छाती उघाड़, ठाढ़ि निर्भय निर्विकार।

लगहि मे नढ़िया भुकल जोर सँ
टुटि गेलनि नीन, लगलाह छने छन बदलय करोट।
मुनिक कछमछी देखय जनि हुलकी देलनि,
अनहरियाक पंचमीक चान।
रोकि न सकला अपन मनोवेग, हँसि देलनि भभाय।
हुनक हँसी सँ भरि गेल छल जंगल गगन।
टोल पर उठल गीतक झंकार।
ओरनीक संग बाँसुरी देल।
पराशरो लगला सुनय अकानि।
"सुनै जो भैया पाथि क' कान,
गीत छइ नवका कथा पुरान।
भेल छला विसवामित्र नामक ऋषि बेजोड़,
मने मन सब जन हुनका लागइ जो गोड़।"
जनमला भ' क' राजकुमार,
सुन्दरता मे जनि कामदेव अवतार।
पहिने पढ़लनि ओ चारू वेद
तखन सिखलनि युद्धक भेद, प्रभेद।
वयसेँ समर्थ, विद्येँ विद्वान
व्यवहारेँ पटु समयज्ञ सयान।
पिता बना देलथिन महराज।
दुनियां मे राजाक होइ छइ एके नीति।
अव्वल राजा पर करब चढ़ाइ।
मनुखक मूड़ी केँ काटब घास नहाँति।
ओकर शोणित केँ बहबय पानि समान,
ढूसि लड़ब केँ मानय पुरुषक सान।
मुदा राजा विसवामित्र धयलनि दोसरे बाट।
अपने राज पर कयलनि सन्तोष।

प्रजा सब केँ मानथि पुत्र समान ।
गाम गाम मे अपनहि जाय,
पढ़ाबय लगला आखर वेद ।
अपना केँ बढ़ामन घोषित कयल,
देश पर दोसर राजा ने करय चढ़ाइ,
तेँ सब केँ सिखबथि अस्त्रशस्त्रक ज्ञान ।
सब केँ बनबथि वीर जवान
प्रजा केँ भेटओ अन्न अलेल,
जंगल जंगल मे घूमि अनलनि घनेरो तरहक अन्न
अमन, जल्ली, गढ़्ड़ि ओ आँसु
मकै, मड़ुआ, मसुरी, कोदो, काउन, खेसाड़ि
अपन देश भरि कयल प्रचार ।
महिंस सन दुधगरि पशु केँ ओहे
जंगल सँ आनि,
ओकर पालन लोक केँ देलनि सिखाय ।
पहिने भदबारि मे होइ छल एके टा उपजा, धान,
तेँ जोतषी लिखलनि अगहन मास लेवान ।
मुदा विशवामित्र तकरा देलनि मेटाय ।
राजा रहितहुँ विशवामित्र न पहिरथि राजमुकुट
ने बैसथि सिंहासन पर जाय ।
न बान्हथि तीर-धनुष तरुआरि ।
खेती ओ पशुपालन बेर मे
बनि जाथि ओ छेहा किसान
आ विदवानक लग मे ऋषि महान ।
अपन देश मे अपने सन समाज,
बनबैत छलाह ओ राज करैत ।
विशवामित्रक राजधानीक रूप
रहनि हुनक विचारेक अनुरूप ।

सिपाही–सेनाक तड़क–भड़क नहि
सब्रतरि सिनेह, शान्ति, सौजन्य सन्तोषक
पहरा पड़ैत ।
कट्टर पुरना चालिक मुनिकेँ
नहि लागै छलनि सोहाँत;
तेँ छलाह गलंजर गढ़ैत, उठबैत ।
एक गलंजरक तऽरक असली कथा,
आइ हम छियऽ सुनबैत,
बिश्वामित्र राजधानी मे घुमैत, पशुशाला मे
महिसिक बथान पर छलाह पहुँचल ।
हुनका देखितहिं घास खायब छोड़ि,
नमराबय लागल घेंट ।
मुनि सबकेँ छुब्रैत, थपथपबैत छला बढ़ल जाइत ।
एके बेर बेली, जूही, चम्पा, गुलाबक
गमक सँ भरि गेलैक बथान ।
विस्मित मन घुरि ताकल मुनि,
बिजलोता सन गोरि समरथि माउगि
मुनिक पैर लग पेटकुनियां पाड़ि
लागि लेलकनि गोड़ आ भेलि ठाढ़ि ।
सहज स्वर मे मुनि पूछल—"केथिकहुँ अहाँ ?
हमर प्रयोगशाला सम विद्यालय मे
छी किएक आयलि असमय मे ?"
"हम छी एक टा नारी । इन्द्रक वैभव बल सँ
बझावलि, बान्हलि, मेनका नामक अप्सरा छी कहब्रैत" ।
सुख-विलासक साधन अछि भेटैत अलेल ।
देवगणक सम्मानो छी पाबैत ।
मुदा हमरा अन्तर मे बैसलि नारी
नहि पाबैत अछि सन्तोष, नहि होइत अछि तिरपित ।
मुनि जी ! महिस सन अभद्र बुद्धिहीन पशु

जे जंगल मे रहैत छल बौआइत
एकर धरती पर लोटाइत अडुआर कें नोचि
खाइत छलै बाघ हुड़ार ।
घिवगर, छल्हिगर दूध जाइत छलै बेकार
आइ अपनेक खोज सँ बनल अछि,
मानव समाजक स्नेह पात्र ।
मानव समाजो पौलक नवीन दूधक स्रोत ।
महामुनि ! क्षत विक्षत होइत रहल कौमार हमर
मुदा, सुनि नहि सकलहुँ मधुर "माय"
नामे सम्बोधन !
पत्नी, माताक आदरास्पद पद रहौ दूर
परंच आत्माक प्रवाह जीवन्त रहितै हमरो
जँ एकोटा सन्तान होइत ।
ईश्वरक देल हमर देह मे कोखि, दूध
व्यर्थ नहि जाइत ।
मेनका रहलि ठाढ़ि धरती दिस ताकैत,
पैरक औंठा सँ किछु आखरहीन पाँती लिखैत ।
मुनि जी, मेनकाक सुनि बात,
किछु छन धरि रहि आवाक कहलनि—
बेस ! एक सन्तानक लेल हमर भेलहुँ अहाँ धर्म संगिनी ।
परंच सन्तानक शैशव वयस धरि पालन,
लालनक भार अहीं पर, मायक रूप मे ।
ओ सन्तान पहुँचय तेहन स्थान पर
जाहि सँ शिष्ट समाज मे पाबय सम्मान
ब्राह्मण वशिष्ठ बनाबथि यजमान अपन ।
ओकर हाथ सँ पाबि दक्षिणा दान
देथि आशीर्वाद अपन ।"
एहि लेल अहूँ कें रहय पड़त सतत सावधान
हमर तँ इहो एक प्रयोगे रहत महान ।
मेनका प्रसन्न मन कुटी-कोबर मे कयल प्रवेश ।

ओही मेनकाक नाति, भरत नामक महाराज
सगर जगत मे भेल पूज्य विश्वविख्यात ।
देशक नामे भारत पड़ि गेल,
मुनि विश्वामित्रेक छल बुद्धिक खेल ।
धनबल सँ स्वर्गक महराज
इन्द्र, मेनका केँ देलनि बिगाड़ि,
तइयो ओ रहि गेलि मनुक्खे नारि ।
देलक देश केँ रत्न अनमोल ।
लगै जो पुनि मुनि केँ गोड़
जाइ जो घर, भेलउ गीतक ओर" ।
पराशर सुनलनि गीत अकानि
गवैयाक स्वरक मधुरिमा
गीतक भास सहज–सोझ
चिनगी सँ वहराइत इजोत जकाँ
शब्द शब्द सँ बहराइत अर्थ ।
अर्थो अनूप नवीन,
स्वतः सत्य लागैत ।
गाङोक जगह पर देखल एक विशाल समाज ।
ओकर अलिखित शब्द–साहित्यक भंडार,
अर्थो नवीन, सत्य सन स्वतः बुझा पड़ैत ।
अपन साहित्य सँ छलहुँ बुझैत, विश्वामित्र केँ
हुंड, मोचंड, उनटे बँसुरी बजोनिहार, कामी
क्रोधी, अधीर।
ओकर साहित्य सँ पौलहुँ हुनका
प्रगतिशील मानवक रूप मे ।
हुनक कार्यकलापक विश्लेषण सँ
आब ओकरे साहित्य बुझि पड़ैत अछि सत्य यथार्थ ।
ओकर साहित्य औरो श्रवण करबाक योजना
बनबैत, पड़ि गेलाह नीन ।

कथा के नव अर्थ

जीवछक जीवन

बहुआड़, साहड़क खाम्ह, खाम्ही साहड़, मेनहर केर,
बड़ेरी सुरेब सीसोक, करिलतक कनौत कसल,
अकठ-बकठ केर कोड़ो, खड़हीक छरनि,
मूजी सँ ठाठल; मूजेक अणाच ओ सगुन बान्ह ।
राड़ी-डाभी सँ छारल, डाभेँ पीटल मठौठ,
सरौते साधल ।
पनिआगर धरि कैंची सँ कतरल सन
कचिया सँ काटल ।
झाँझनक टाट गाबिस माटि सँ लेबल
दोलेब, ढौरल सन बुझा पड़ैक ।
नित नीपल गोबर सँ दाबा धरि, मुनहर सन
सुन्नर गहबर सन पवित्र,
जीवछक घर घरबेक श्रमरत
निर्मल जीवन केर परिचय छल दैत ।
घरक लग मे जामुन-जलपै, आम, लताम
बैर करोना, नेबो, कमरख कलसल जनि
खलखल रहय हँसैत ।
आङनक एक कात मे सैंतल, साँठल
सरिऔल रहै राखल भाला, बर्छा, कछार,
गणास, सहथ, गोजी, गाँज, पही, पहटा,
डाभ, टापि, डेली, खोङी, अन्ता, टेहुकी,
जाल, सरैला, कङुआरि,
लग्गी लग्गा, बाँस, पटै, बहिङा, कोदारि,
खन्ती, कुड़हरि, सभ मछबारि शिकारक साङह
जेना रनक खेत मे पल्टन

राखै अछि हथियार अपन तैयार
रहै अछि होसियार सतत ।
श्रमिक जीवन थिक,
सदिखन रहब लड़ैत,
जनि से छल बुझबैत जीवछक घर आङन ।
ओसारा पर पटेढ़क पटिया रहै बिछौल
जीवछ चनबाड़ लागि ओठङल
पैर पसारि, टापि रहय बीनैत
गुमसुम, चुपचाप ।
जेना मैथिलीक गमैया कवि
कय रोजाना काज-उदम
थाकल ठेहिऐल, साँझ मे
पटिया पर पेटकुनियां पड़ि
धुँइस्तू इजोत मे आँखि निड़ारि
लिखै छथि चिन्तन-अनुभूति दिन भरिक
पहर राति बितबाक सूचना, देलक नढ़िया
झौहरि मचाय जंगल मे ।
तरेगन सभ चमकै छल
जेना नेता विहीन दल मे
सभ जन नेता अछि बनय चाहैत
सुकतारा पहुँचल आकाशक किन्हेर मे
गाङोक फोंफ लागल सुना पड़य ।
राति रहै अनहरिया ।
धारक कलकल, खलखल रव भेल जोर
जमुना कलबल आबि
जीवछक पैर अपन जाँघ पर राखि
जाँतय लागलि ।
पंडितक मतें शृंगार रसक

आलम्बन, उद्दीपन, विभाव छल तूल भेल ।
दौड़ल अबैत अनुभाव व्यभिचारि भाव
होइत रसक परिपाक ।
मुदा ओ सभ रहि गेला कनाह
देखि न सकला पूरा दुनियां ।
लक्ष्यहीन जीवन-यात्राक पथ निर्माण
पाथेयक ओरियाओन मे
वीभत्स, भयानक रसक
आलम्बन, उद्दीपन, विभावक छाती पर
जे दिन राति काज करै अछि,
तकर शृंगार रसक आलम्बन
अपन पत्नीओ, समर खेत केर
सहयोगी-सङ्ग्रे अछि बनि जाइत ।
वंश वृद्धि केर पाशव प्रवृति टा रहै अछि जीवैत ।
धारक कात जंगलाह जगह मे वास,
बनैया सूगर, बाघ हुड़ार
भालु सनगोहि दराध सँ,
परिवारक रक्षा लेल सतत तैयार
होसियार रहय पड़ैत छलैक ।
आ' आहारक लेल
भोरे अन्हरोखे, कहियो अधरतिये मे
छल धरैत कड़ुआरि वा जाल-सहथ-कछार
मछवारि सिकारक हथियार ।
असोथकित तन
पर दिनक पाथेयक चिन्ता मे डूबल मन
मुनहारि साँझ मे घर घुरैत छल ।
धियोपुता केँ भरि आँखि देखबाक
दुलार करबाक सेहन्ता
नहि क' सकैत छल पूर ।
पेटबोनियां लोकक जीवन केँ

केओ न आइ धरि चिन्हलक ।
मस्तिष्क मनुष्यक, मुदा जीवन
पशुक समान संयोगक उपर निर्भर ।
जीवछ टापि बिनैत रहल
जमुनाक हाथक स्पर्श नहि क' सकलै पुलकित ।
पैरक आङुर फोड़ैत जमुना--
"कोना क' रहतह ठाढ़ ई देह ?
टापियो भ' जेतह उबानि ।"
कहैत हाथ सँ छीनि टापि केँ कात मे राखि,
जीवछ केँ पकड़ि पाँज सँ पटिया पर
देलक ठेलि खसाय आ जाँतय लागलि ।
सहकर्मी संगी जमुनाक,
स्नेहें शीतल-सुरभित स्वर-व्यवहार
डुबा देलक जीवछ केँ जनि
लेभेण्डरक सागर मे ।
बिला गेलै सब दरद-बेथा तन केर ।
उठि पजोहि जमुना केँ कहलक—
"जामुन ! तोँ छिकी हमर
जीवन पथ-पाँतर केर अपरुप पाकड़ि ।
बाटक पाकड़ि ठामहि रहि जाइ छै
बटोही छहरा जिरा अछि बढ़ि जाइत
मुदा हमर पाकड़ि तों छह
सदिखन संग रहैत छाहरि-दैत ।"
"आ' तों तेहन छह बुधियार
जे रोपि लेने छह हमरा अपन कान्ह पर,
जकर भार सँ होइत रहै छह अपसेआँत
मुदा बुझै छह-गाछे दै अछि शीतल छाहरि
केहन जादूक खेल हम छी करैत ?"

देलक ठहक्का नहुनहु जमुना,
जीवछक दाढ़ी ठोर छुबैत ।
पुलकित तन जीवछ जमुना कें पँजोहि
कहलक गंभीर स्वर मे
"जामुन ! कोनो काज करैत रहै छी
मोन हमर रहैए सोचैत
की हमरे नहाँइत हमर बेटा-पोता
नाति-परनातिक जिनगी बिततै ?"
की भेटत कोनो उपाय जिनगी कें बदलैक ?
सुअन्न भोजन, नीक बिछान
तँ सपनो मे नै भेटि सकै अछि ।
राजा महाराजक बात रहौ कात, ओकर नोकरो चाकर ।
अनेरो दैत रहत टहलान
खेला लेत झिलहोरि
आ खेबा मे दैए मारि-गारि ।
ऋषि-मुनि केर रहै छनि भिन्ने ताव
द देबौ सराप 'क' देबौ भसम
नै तँ राजा कें कहि शूली पर देबौ चढ़ाय
तें धुनै छी अपन दिमाग
भेटय कोनो मजगूत ताग
जाहि सँ मनुक्खक जिनगी पाबि सकी ।"
जमुनाक मोन मे उपजल-अंकुरल सन
शृंगार रसक भाव बिला गेलै
लैत जोर सँ साँस बाजलि
"लिखि देलनि विधाता जे कपार मे
तै सँ उधार के क सकतै ?
तोहर जुआनी सुखा गेलह मेहनतिएँ
से देखि होइए हमरो अनधैर्य ।

कहियो ही भरि नहि सुस्ता
सकला ने सूति।''
जमुनाक आँखि डबडबा गेलै
जोवछ जोस सँ बैसि बाजल
''जमुना ! हम विधाताक
लिखलाहाक हिट्टी बात पढ़ि लेलिअनि—
पुरुषे टा होइए अछोप राड़।
नित्तह हम देखैत रहै छी इहे बात।
जे मुनि सब पुरुष सँ रहथि दूर कात
जनि छूति जाइ छनि रौदो बसात।
से समरथि माउगि कें देखि
बचबैत लोकक दिष्टि-नजरि
बैसै छथि ओकर लग मे अपना भरि।
पुरुषक संग बाजथि कड़ा बोल
जनि मुँह मे रहै छनि काँच ओल
मुदा समरथि माउगि कें कहथि उहे
मुँह मे भरि मिसरीक घोर।
तौं जनी जाति जँ करह जोर
तँ नरकी जिनगीक भ सकत ओर।''
करऽ देह गाङोक विआह
एक बाभन मुनिक संग
ओ छथि जुआन
हड़गर, मसुगर सुन्नर कुमार।
बाजथि हमरो संग मधुर बोल।
गाङो पर छथि जनि लुबुधि गेल
से आँखि-भौंह सँ हम छी समझि गेल।
जमुना कहलक नरम स्वरें—
''हमरा ओकरा पर नहि बिसवास हैत

अपन हाथ छै पोथीक लिखना
बना लेने अछि नियम-धरम
बाभन बिआहय सभ वरन
अपन गरमी टा झाड़ि लेत
गाङो केँ छुतहड़ नहाँइत ओंधड़ाय देत ।
ऐ सँ ककर उधार हेतै ?
गाङोक जुआनी टा बुड़तै ।"
गाङोक बेटी-बेटा केँ जँ बाभन बना लैत
तखनी ने आधो काज होइत
से कहां करैछ ?"
"कते छौंड़ी केँ तँ कयलक ढींढ़
सबहक नेना रहले हैत अनचिन्हार" । उत्तेजित
स्वर मे कहलक जीवछ----
आत्मविश्वास भरल स्वर मे
"जमुना हमरा नहि मानह कचकूह तेहन
पहिनहि गछा लेबनि ई बात ।
गाङोक बेटा केँ पढ़ा-लिखा
बाभन मुनि पंडित बना लेथिन
तँ गाङोक पकड़य देबनि हाथ ।
जँ सकारि लेथि ई सर्त
तँ बिआहने कोन हर्ज ?
मुनि सब केँ ई बड़गून छै
जे गछल बात केँ पालत जरूर" ।
जंगल मे घुमड़ल हुड़ार
खटखटा उठल खिखिर खट्टाँस ।
जीवछ रतिगर भेल बूझि
टापि हाथ ल' उठल
जमुना पटिया लेलक समेटि
बूनू घर मे कयलक प्रवेश
भीतर सँ फड़की बन्द भेल ।

जीवछ-गाङो

पुबरिया अकास रहबे करइ ललोन
दिनकर चढ़ि आयल रहथि बाँस भरि उपर।
गाङो रहय नाव खेबैत।
जीबछ जाल फेकैत आ बाझल माछ
केँ खोङी मे राखैत।
बीत-ब्रीत भरिक सूहा, रेबा, दरही टा छलइ पड़ैत।
दुइए-चारि पार मे खोङी भरि गेलैक।
जीवछ जाल समेटि बैसि गेल चुपचाप।
पुनि बाजल कने धखाइत—
"गाङो तोरा अछि किछु कहबाक बात
तइँ आयल छी टोल सँ दूर कात।
तोँ भ' गेली आब समरथि सयानि
क' ले विआह से हेतउ नीक
जे मनुख तोरा हउ पसिन्न
तकरो जँ तोँ भ जाही पसिन्न
तँ क' ले बिआह।
बिआहक छिअइ इहे सब सँ उत्तिम विधान
मुदा............कहि जीवछ हिचकिचैल
रहि गेल मौन।
मुदा की ? से बाजह ने निधोख..?
बाजलि गाङो हँसैत।
तोहर सन सुन्नरि बुधिआरि नारिक
बेटा जँ हमरे सन गोढ़ि गमारे होइक
तँ बुद्धिक मानय पड़त हारि।
नेनहि सँ तोहर बूधि, विचार, काज

देखि, कते मुनि भेला परसन ।
रहला अवाक ।
किछु दिन सँ हम छी ताकुत करैत ।
पराशर मुनि अधिक खन एही बाटे
छथि अबैत जाइत ।
कहियो अनेरो छथि बिलमि जाइत ।
हमरो सङ राखै छथि सिनेह भाव ।
तोरा अनेरो दइ छथुन टोकि ।
हुनकर मन तोरा पर छनि अटँकि गेल
से हमर मन मे अछि बैसि गेल ।
तोहर बेटा केँ पढ़ा लिखा
पंडित मुनि बना लेथि ।
से सर्त करा जँ करितेँ विवाह
तँ तोहर जिनगी जैतौक बदलि ।
आन मुनि सँ हुनकर सोहाव छनि
भिन्ने जरूर ।''
गाङो बापक बात ध्यान संग सुनि
बाजलि जोर सँ साँस लैत
वेदना भरल स्वर मे—
"बाउ ! तोँ कहलह सब टा हितेक बात
मुदा बुझि पड़ैए तोहूँ आइ छह
भासि गेल ।
हओ, कोन मुनि कहिया कयलक
राड़िन सङ बिवाह ?
जँ उठालइ इसतिरीक भार
अन्न बस्तरक करइ जोगाड़
आङ समाङक राखइ खोज खबरि
धिआपूता केँ पोसि पालि बना दइ मनुक्ख

तखनी ने मानबइ जे भेलइ बियाह।
लोक नइ कहय लंपट नढ़ेर
ताइँ देने छइ बियाह नाम।
झाँटय बाढ़नि अइ बियाह केँ।
पराशरक सोहाब हमरो अखनि नीके लगैए
मनुख नहाँति जँ करता बात बिचार त ठीक।
सर्त मानि लेता तँ हमरो हरख हैत।
मुदा जँ करय लगता जोर-तोर
हम लग्गा सँ देबनि कपार फोड़ि
मारि एँड़ सँ कोंढ़े देबनि तोड़ि।
गाङोक कोखि राड़-अछोप के नइ जनम देत।
से तों गीरह बान्हि धरह।
पराशर छथि भिन्ने रंग सोहाबक से सत्त बात
मुदा छथि त पुनि मुनिए।
जे गहुमन नइ काटय फोंफिआय
तकरा की धामन मानि लेब ?
मुनि केँ रहइ छइ हिसख जुलुम जोर करबाक
जँ ओहो पकड़थि सेहे चालि ?"
जीवछ केँ लागि गेल छलइ धनचर
नहि फुटलइ मुँह सँ बकार।
गाङो पुनि बाजलि शान्त स्वरेँ —
बाउ ! गाङोक कोखि सँ नहि जनमय
पौत राड़ गोँढ़ि।
जीवछक देह मन उठल छल काँपि जरूर
मुनि केँ मारि देतनि एँड़ ! एहि बात पर
मुदा लगले सम्हरि बाजल—
"गाङो ! तोँ जे कहलेँ सेहे ठीक।
बिनु जान अरपने नइ भेटत मान

हमर आउरक पुरखा जाने केँ रहलाह बँचबैत
तँ खनदाने सँ चलि गेल मान।
अपनउ मे तँ कटैत मरैत रहिते छी !
मुदा सुरुहे मे नइ लिहें झगड़ि।
संकलप अडिग, बोली मीठ, नरम
स्वर लसिगर बेथा भरल, छइ बड़ काज दैत।" कहलक जीवछ।
"नाटक करब सिखा दितह पहिने"
बेस ! चलह ! आब हमरा लागल भूख जोर
रेबा सूहा सन हिलसगर माँछ
धैरज केँ अइ चटने जा रहल।
हम झटपट निका देबै। माय पका देति।
हम बैसलि-बैसलि खेबह अघाय।

पराशर ओ जीवछक नीतिक खेल

जीवछ ! जीवछ ! हओ जीवछ घटवार हमर !
उठह ! उठह आबह बाहर
हम थिकहुँ पराशर छी ठाढ़ तोहर द्वारि पर।''
''परनाम मुनि जी परनाम !'' कुहरैत सन स्वर मे कहैत
कूशक खिनहड़ि बिछा डाँड़ झुकौने
ठेङाक भरेँ भ गेल ठाढ़।
''राखह ! राखह ! आसन तासन
लाबह लग्गा कड़ु आरि
क' देह पार ई अपन धार।''
कहल पराशर एके निसास मे।
जनि भेल रहय निष्प्राण
हुनक आँखि ओ कान।
अपन बेगर्तें आतुर लोकक
ज्ञानक यैह छै होइत हाल।
''मुनिजी ! ड़ेन पाँखुड़ अछि कनकनाइत
रहि रहि डाँड़ो अइ कचकैत।
ठेङो नइ कसि क' छी पकड़ि सकैत
होबऽ दियउ परात।
कोनो छौंड़ा केँ पकड़ि हम पार करा देब;
एखन सब हेतइ निसां मे मातल, भेर नीन।
मातल औंघैल छौंड़ाक हाथ मे अहाँ केँ कोना फेकि देब''
कहल जीवछ सिरसिराइत।
''एँ ! डाँड़-पाँखुड़ दूनू छह दरदैत तोहर ? श्चुः
तै दिस नहि गेल ध्यान हमर।
तोहर मन मे हमर जानक एतेह मोह ?

आ तोहर कष्ट पर हमर ध्यानो नहि जाय,
से भेल बड्ड कोनादन ।
मुदा हम छी बड़ अगुतैल
हड़बड़ मे गड़बड़ हो काज से ठीके कहबी छैक ।
हम एखनहि हैब पार ।
कहक अपन बेटी कें क' देति पार
नाव खेबै मे के कऽ सकैछ ओकर परतर !
तोहरो रहतह निश्चिन्त मोन ।''
कहल पराशर सस्नेह स्वरें ।
''बेटी गाङो ?'' चौंकल जीवछ
''मुनि जी ! अहाँ कहै छी सत्त बात ।
केहनो सँ केहनो भौंक कें कऽ लैए पार ।
बूढ़ो बुढ़ानुस कें छइ छगुन्ता लागि जाइत
तुरिया छौंड़ो सब कें छइ होइत डाह ।
मुदा, छइ अदनार उमेर, मिजादि बड़ कड़गर
जे चढ़न्त जुआनीक लच्छने छिकइ ।
भरल धार, रेतो छइ कड़गर
अहाँ आउर तँ होइते छी कड़गर ।
सब कड़गर मिलि कऽ दिएन कहर ।
अहाँ आउर कें हिसख ऐछ लगले बिगड़ि जैब
डाँटब, डपटब तँ थूकक खखारे सन छी बुझैत,
गरिऐब, मारब लतिऐब खेवा छिअइ दैत ।
गाङो नइ से बरदास्त करति ।
की क' बैसति से नइ जानि ।
अपन जान कें जाने नइ छइ बुझैत ।
मुनि जी ! एखनि छइ बड़ रतिगर ।
तइ पर सँ लागल छइ कुहेस ।
एकसरि गाङो रहति डरैलि

अहूँ सब सोभाव सँ छी नचार
काँपय हिरदय हाड़ हमर ।
जँ दुरघटना घटि गेल तँ हम की हैब ?
जीवनक एकटा तुतनी गाङो बुड़ि जैति ।
अहाँ सनक मनुख मुनि पुनि न पायब
मुनि जी, अहाँ ओलक वन मे छी मिसरीक कन्द ।
जीवछ, विह्वल स्वरें कहैत खसि पड़ल मुनिक पैर लग ।
पराशर सरिपहुँ छला मनुष्य मुनि ।
जीवछक डेन पकड़ि लेलनि उठाय ।
सिहरि उठल जीवछक आङ
बाजल हाथ जोड़ि थर थर कँपैत--
''हमरा अधरम छी किए दैत ?
हम छी अछोप, हमर डेन की पकड़ि लेल ?
कोना हमर ई पाप कटत ? कोना उधार हैत ?''
''कहक गाङो कें क' देत पार
ताही सँ कटि जेतह सकल पाप, हेतह उधार ।
हम एखनहि बनि जाइत छी मोम
निश्चिन्त करह तों अपन मोन ।
कहक, आब नहि करह देर।''
कहल पराशर हँसैत ।
''गाङो ! गाङो !'' जीवछ कयल सोर
बहरैलि गाङो मीड़ैत आँखि ।
'हमर डेन पाँखुड़ अइ कनकनाइत ।
मुनि जी एखनइ करता धार पार
तोँही क' दहुन पार ।
डरिहें घबड़ैहें नइ, मुनि जी छथि बनि गेल मोम
गाङो पछुआड़ गेलि
नुआ कें भड़कछ बनाय,

आँचर केँ कान्ह पर द' ढट्ठा जकाँ बान्हि डाँड़ मे
लय लग्गा कड़ आरि;
जनि बर्छा तरुआरि लय चलल हो युद्ध मे
जीवछ जमुना केँ लागि गोड़
मुनि केँ माथ झुका परनाम कहि,
चललि नाव दिस।
पराशर प्रसन्न मन कयल अनुगमन।
जीवछ जमुना गाङोक पदगति सँ हृदयक
दृढ़ता विश्वास रहल तौलैत।

●●

पराशर-गाङोक परिणय

गाङो अड़ा लग्गा कें किन्हेड़ मे देलक नाव चलाय।
किछु क्षण मे भेल अदृश्य किनार।
गाङोक संग एकसर मे भेट करबाक
मुनिक छकल-बकल छल भेल सफल।
परन्तु पराशर नहि रहथि हुंड मोचंड
अथवा लंपट नढ़ेर, कामे आन्हर।
ओ गेल छला सज्ञान वयस मे प्रयाग
देखलनि गंगा यमुना संगम तीर्थराज कहबैत।
जमुना चाकर गहींड़, जामुन सन जलपूर्ण, भयावन।
गंगा साँकड़ उत्थर, जल सफेद फड़िच्छ।
प्रकृतिक गतिवस दुनू धारा मिलि एक भेल
जमुना जलक भयंकरता बिला गेल।
लाल जलमयी सरस्वतीक नामो निशान नहि।
तथापि त्रिवेणी बनल, छल तीर्थराज कहबैत
प्रकृतिक गति सँ प्रेरित गंगा अछि मिलैत जमुनाक संग।
वर्ण भिन्न रहितहुँ दुनू मे अछि एके जीवनमय जल बहैत
दुनू जल एकाकार भेल तँ जमुना जलक भयानकता बिला गेल।
धारक आयाम बढ़ल, बल सामर्थ्य भेल प्रबल
पराशरक मन मे उठल प्रश्न —
ई देश तँ नदीक संगम सँ अछि भरल।
कोसी, कनकइ, रीगा, कृष्णा, तिलयुगा, तिलावइ
धेमुरा, बदला, गहुमा, बलान, सुगरबइ
सोनी, धौरी, बुढ़नद, बागमती, नीमा, गंडक
सरयू, गोमती, बरुणा आदि अनगनित घनेरो
धार हिमालय सँ बहराय, सखी बहिनपा जकाँ मिलैत

आगू अछि बढ़ैत ।
केवल गंगा जमुना संगम कें किएक कहल तीर्थराज ?
हजारों लोक आबि आँखि आत्मा अछि जुड़बैत ।
पराशरक चिन्तलशील हृदय गंगा जमुना धार कें,
मानल देशक कारी गोर मानव जातिक प्रतीक,
ज्ञान प्राणमयी शोणित सरस्वती दुनू में अछि बहैत ।
तें ज्ञानस्वरूप पुण्यवाने टा सरस्वती कें देखि सकैछ
से अछि कहल जाइत ।
देशवासीक हृदय मे दूनू जातिक एकाकार
होयबाक भावना प्रबल द्योतित अछि करैत
गंगा जमुना संगम कें "तीर्थराज" नाम देबाक घोषणा ।
पराशरक मन सदा रहल मनन करैत
अपन अनुभूति अध्ययन कें जोड़ैत ।
गाङोक तारुण्य तरंगित तन कें देखि,
अपन संतान कें प्रयाग सन बनयबाक
संकल्प कय गाङो रूपी जमुनाक संग
संगम छला चाहैत ।
तें ओतेक छकल-बकल सँ आनले छला अवसर
से छल बितल जाइत ।
मुदा प्रस्तावक शब्दे नहि छलनि सरियाइत
गाङो चलबैत छलि कड़ुआरि मुदा
घमा रहल छल पराशरक आङ ।
"बहय बड़द हकमय कुकुर" कहबी
छल चरितार्थ होइत ।
गाङो अपनहु छलि चाहैत ओहे बात
तें कड़ुआरि कें पानि पर बजारैत छलि जोर सँ
मुदा चलबैत छलि नहुँ नहुँ ।
पराशरक मनःस्थिति बुझलक
चतुरा नटी जकाँ--

"मुनि जी ! जेहने हलतलबी अछि अहाँक
तेहने हब्बर हब्बर हम चला रहलि छी नाव
एक चौठाइ धार कऽ गेलउँ पार"
बाजलि गाङो मुसकिआइत ।
गाङोक बात, पराशर केँ देलक हड़बड़ाय
प्रेमालापक लेल सोचल सरिऔल
सुकुमार शब्द गड़बड़ा गेल ।
नव विचारधारा सँ दाबल औनाइत
ऋषि जातिक अहंकार सहज, कंठ मे चढ़ि बैसल
"कतय ल' जाइत छह नाव ? लगा कोनो दीअर पर
कर हमर कामाग्नि शान्त ।"
कहल पराशर हुकुमक स्वर मे निधोष ।
तहिया ऋषि मुनिक छल बाजैत डाक ।
राजा महाराजो काँपै छला सुनि तनिक हाक ।
समरथि कन्या केँ दै छला सोंपि,
एकसर एकान्त मे सेवाक लेल ।
जंगली गाङोक कोन धाख रोच ?
"मुनि जी ! हम छी गोढ़नी अछोप
हमर छाहो सँ छुतइए अहाँक देह,
से अहाँ पकड़ब हाथ सँ हमर लात ?
रिषि मुनियों एना जँ भासि जाथि तँ ककर
लोक बिसबास करत ?
जलदीए हम छी क दैत पार, ल नाव
चट कुहेस मे बिला जायब ।
अहाँक आगि अपनइ मिझा जायत
जारनि रहनै ने धधकै छै आगि जोर ।
गाङोक ठोर पर छल विहुँसी नचैत
मुदा कुहेस मे मुनि केँ नइ छल सुझैत ।

मुनि होइत छला सर्वज्ञ
तीनू कालक बात छलनि सुझैत,
से पंडित सब ढोल रहथु पिटैत ।
परंच पराशर जानि न सकला जीवछक चालि-जाल ।

पराशरक पारा उपर चढ़ल
स्वर भेल प्रखर—
"गाङो । धर्मशास्त्र हमहीं छी रचैत,
सब जातिक कन्याक संग विवाह करबाक
ब्राह्मण केँ अधिकार छैक
रतिक समय मे नहि लगैत छै छूति-तूति
कहल पराशर बाहुर किचैत ।"
"अपने बोली अपन कलम,
जे नइ निमहल तकरा लिखल धरम
लिखू, तारक पत्ता छइ अलेल ।
हमरा तइ सँ मतलबे कोन ?
सब दिन भूखेँ छी जरैत रहैत,
अहाँ सुहुक गंजन-फज्झति सहैत ।
मुनि जी ! हमहूँ सब छी मनुख
तेँ ने हमरा पर अछि मन सनकल
से किएक नइ छी विचारैत ?
गाय-भैंस त छइ ढेर ढहनाइत
हम डबरा बनल रहब,
अहाँ सब साँढ़-भैंसा नहाँति
धाङि-धूङि अपन गरमी झाड़ि विदा हैब ।
तेहन जिनगी हमरा असहाज ऐछ
द' दिअ सराप क' दिअ भसम
अइ जिनगी सँ भल एके बेर मरन ।"
गाङोक कंठ छल बाझि गेल

छप छप छप छप छल लग्गा बजैत
हिचुकि हिचुकि गाङो कनैत,
मुनि गेलाह सहमि।
मन पड़ि अयलनि जीवछक कथन
संगहि अपनो देल वचन।
पटु नट, नाटक सूत्रधार सन स्वर बदलि गेलनि
ठहाका दैत कहल—"गाङो! क्रोध शृङ्गार रस केँ
डाहि दैछ।
बल प्रयोग पशु सन मूर्खे टा अछि करैत।
शृङ्गार तखन अनुपम आनन्दप्रद अछि होइत,
जखन दुनूक मन भय उन्मन
बिपरीत ध्रुवक चुम्बक समान अछि करैत मिलन।
अपन वंश विस्तार कामना थिक प्राणी मे
प्रकृति प्रेरणा।
मनुष्य अछि होइत ज्ञानी विवेकशील
तेँ सन्तति केँ अछि बनबय चाहैत,
स्वस्थ, सबल, चिरञ्जीवी, गुण मण्डित पण्डित।
तोहर श्रम साधित, सुगठित तन, श्रमशील साहसी मन
मधुर व्यवहार, वचन हमरा अछि कयने विमुग्ध।
हम चाहैत छी तोहर कोखि मे सन्तान अपन।
वासनाक पूर्ति लेल नारी भेटत अलेल।
जंगली गमारि रहितहुँ गाङो, निपुणा नटी समान
हँसलि भभाय।
बाजलि नहुँ-नहुँ नारी रसें घोरल स्वर मे
अपनइ रचने छी तेहन विधान जे
सन्तान रहत विरान।
हमर कोखि सँ जनमल हैत गोढ़ि अछोप,
सेहो हमरे संग रहत रने-बने बौआइत,

गारि-मारि खाइत, भूखेँ टटाइत-सुखाइत
कोना अहाँ केँ रहबो करत चिन्हार ?
चिनहारो रखबै तँ कोढ़गर बेगारे टा मे काज देत।
मुनि जी ! गुँहार-गौसारो खेत मे रोपल
धान, धाने अइ मानल जाइत।
खेतक कारन नइ बनैए मड़ुआ, गद्दरि जनेर।
मुदा अहाँ आउरक सन्तान खेतक कारण
बनि जाइए अछोप-राड़।
अहाँ सुहू केँ नइ होइए गलानि, दरेग तँ
मरले अइ मन मे।
जँ हमर कोखि सँ जनमल पूत केँ
बनबिअइ अपन जाइत बिरहामन
पढ़ा लिखा पंडित मुनि बना लियइ
तँ अहाँ सन बिचार दरेग बला लोकक चरन,
गाञो पकड़ि गहत अरपत तन प्राण अपन।
राड़पूत ले राड़े छौंड़ा अछि लुबधल ललाइत अलेल।
"धान खेतक कारण नहि अछि होइत गद्दड़ि मड़ुआ जनेर।"
अद्भुत सत्य अहाँ आँखि पर आनि देल।
वाह ! आइ सँ सत्यवती रहल अहाँक नाम।
नाव सक्कत दीअर पर जा लागल।
धार पाबि घनगर भेल कुहेस
नहि सुझा पड़ै छल कोनो किनार,
जनि आयल हो बहुरि राति।

व्यासक उत्पत्ति

प्रकृति रचित दीअर मंडप कोबर
वर स्वयं पराशर ब्रह्मर्षि प्रवर।
कनियाँ गाङो गोढ़नी अछोप।
दुनूक मन छल स्वयं घटक
जाति-पाँजि केर फरक कहय
नहि पहुँचलाह पजिआड़।
ने पुरोहित पढ़ौल मन्त्र, ने
कयलक केयो कन्यादान।
ने घी काठी लावा जरौल गेल
ने दान दक्षिणा तिलक दहेजक झमेल
ने मुँह बजौन मनौनक लेस खेल।
दल दल करैत भुमिए पलंग
वर कनियाँ कयल स्वयं हरषि
कातर केसौर बचबा चिचोढ़
पँजिया पँजिया सब रङ बिछान।
कुहेस सघन मोसहरी धऽड़ ओहार
नदीक कलकल कोबर गीत।
विवाहक सुन्दर नवल रीति-नीति
जग केँ कहय जनि रजनी सयानि
दौड़लि उल्लास हास सँ नभ थल केँ भरैत।
द्विजराज चन्द्रमा केँ लागल अनसोहाँत
द्विजक श्रेष्ठता खतरा मे पड़ल मानि
जनि भ' गेलाह कान्तिहीन।
तरेगन सब चुप्पे जनि ससरि गेल
जेना राजा केँ मरितहि सैनिक छल पड़ा जाइत।
किछु अजगुत अभिनव हर्षक अछि बात भेल
से मानि उषा बालिका उड़बय लागल जनि लाल रंग

खग मुख सँ देलक नारा "इनकिलाब" ।
यथास्थितिक पक्षधर दिनकर तामसेँ तम तम करैत
बढ़लाह उपर ।
किन्तु अगणित मानवक उल्लास हास
कुहेस केँ जनि क' देलक सघन
रहि गेलाह पँकिल पानि मे दहाति
पितड़िया थार जकाँ कान्तिहीन निस्तेज ।
गाङो उठि आँखि पोछि पट लट सम्हारि
पराशरक गाल दाढ़ी छुबैत पुछलक
मुनि जी ! की अइ बिचार ?
पजेबोक परदा नइ छइ चिरदिन थम्हैत
कुहेसक परदा आब कते काल ?
पराशर चट मुँह पोछि गाङो केँ छाती लगाय
पाकल जामुन सन ओठ चोभि कहलनि
"आइ राति भ' गेल बड्ड छोट ।
संयम छहर सँ घेरल हमर काम वासनाक
वेग कऽ देने हैत अहाँ केँ क्लान्त श्रान्त ।
अहाँ पड़लि रहू हम स्वयं धरब कड़ आरि"
आ खेवय लगलाह नाव ।
गाङोक मन हर्ष गौरवक अपार सागर में
जनि छल डुबल भासल जाइत ।
किनारक धक्का सँ धरती पर आयल घूरि
देखलक मुनि केँ ठाढ़ ओकरे टकटक तकैत
गाङोक आँखि डबडबा गेलैक ।
मुनि हाथ सँ आँखि पोछि गाल चूमि कहलनि—
"शीघ्रे पहुँचि अपने मुख सँ कहवनि जीवछ केँ
सब समाचार ।"
कहि धयल बाट घुरि घुरि तकैत
गाङो रहलि ठाढ़ि मुनिक पद गति देखैत ।

पराशर गाङोक विवाह कथाक व्याहार

पराशर पालल अपन वचन ।
मुनहारि साँझ, गौंआ-घरुआ मुख्यतः बूढ़-बुढ़ानुस
सब दिन जकाँ छल जुटल, बेस ।
पराशर पहुँचलाह प्रसन्न बिहुँसैत ।
सब उठि कयल प्रणाम आ' झट
आनि कूशक आसन, रहल ठाढ़ ।
पराशर बैसि कहल जीवछ केँ
''हम अहाँक कन्या गाङोक संग कयलहुँ अछि विवाह ।
ओ आब हमर पत्नी थिकी
से बात हम स्वयं छी कहि दैत ।''
राति एतहि सासुर मे रहि आनन्द करब ।
किछु छन सब रहल सन्न, अवाक,
मुदा हर्ष-उल्लास-जोस मे उठल माति,
अहगर क' आगि आनि,
सड़रक चेरा देलक लगाय ।
जमुना मड़ोत काढ़ि ढारय पानि
गाङो मलि-मलिक' पायर धोय
अपन केस सँ पोछि कयलक प्रणाम ।
जमुनाक पाछु लागि अवनत मुख गाङो,
ओतय सँ ससरि गेल ।
जीवछ जनि भ' गेल बताह,
बारंबार पराशरक तरबा तरक माटि लगाबय कपार मे ।
जे आबइ सभकेँ कहैक
''ई मुनि देलखुन तारि, सकले समाज केँ
गाङो केँ लेलथिन अपन पतनी बनाय ।''

ओकर बेटाक करौथिन उपलेन,
बनौथिन अपने सन मुनि महान ।
सब रहि जाय ठाढ़ देखि मुनि केँ
मुसकिआइत बैसल प्रसन्न ।
गाङोक संगी-तुरिया छौंड़ी सब
भ' गेलि ढिठगरि,
रंग-विरंगक फूल लोढ़ि,
मुनिक पैर पर, केओ देहो पर, केओ माथो पर,
लागलि बरिसाबय, हँसैत खिलखिलाइत ।
पुरुष सब, बूढ़-पुरानुस,
डर सँ काँपैत सन रहय डाँटैत-डपटैत ।
परंच पराशर रहथि हँसैत हरखैत ।
जमुना पिठार पीसि देलक अरिपन,
कयलक चुमौनक ओरियान ।
दू चारि जनी ससम्मान सस्नेह कयलक अनुरोध,
"मुनि जी करितथिन कनी किरपा
चलितथिन आङन ।
एतेदिन लागइ छलथिन सुरुज नहाँति धधकैत
मुँह दिस तकबाक साधंसो नहि छल होइत ।
आइ भेल छथिन पुरनिमाक चान समान,
देखतिअनि आङन मे भरि पोख
जुड़बितौं आँखि
मानितहुँ अपन कोखि केँ पुनवन्त पवित्तर ।
मुनि उठि कयल अनुगमन प्रसन मुख ।
जमुना पीसि पिठार देने छल अरिपन पटिया पर
उठल चुमौनक गीत,
बाहर सँ जीवछ समाजक संग, छल सुनि-
सुनि पुलकित-हरखित होइत, मगन मन ।

राति रहि, कोबर कय, गेलाह अपन ठाम पर।
गाङोक आदर आकास चढ़ल,
जीवछो बुझू माइनजने सन बनि गेल।
ऋषिओ सब करथि बात कनें धाख राखि,
पराशर पर मने मन खौंझाइत।
अपन जातिक छौंड़ा सब
जे गाङो केँ छल चाहैत
भ' हतास बाटो देलक छोड़ि।
जमुना पराशर क बतौल, मोथाक कन्द,
कतराक सीर, हरदि, कचूर, मसुरीक दाठि
सबकेँ कूटि-पीसि बना उबटन-कसाय
गाङो केँ नित्तह दै छलि ओङारि।
जे घर आङन,
महकैत रहै छल बिसानि
से गमकय लागल अमोल।
घर घर सँ आबय लागल सधोरि।
माछ, मासु, ओइरींक खीर,
भेंटक लाबा, खुम्भीक लाइ
माढ़, मुरही, घुघनी, उसिना, सातु साना
टोल भरिक आङन मे जे नव छलै बनैत,
से द' जाइत छलैक जमुना केँ गाङोक लेल।
दोजीवा नारि ताहू मे पहिलौठी केँ,
भड़छैत रहै छइ जीह
से सब जनी अछि जनैत।
गाङो छलि बनि गेलि, भरिगामक
लछमी बेटी, कुलतारनि।
केहेन असाध काज ओ छलि कयने,
लेलक परेम मे बान्हि।

सरिपहुँ भेल छल अजगुत बात।
मसमे खड़मे पराशर घुरि फिरि
छला आबि जाइत।
गाङो पयर धोय लागि गोड़
पाँजर लग छलि बैसि जाइत।
किछु इदिर-बिदिर गुन-गुनाइत
राखि माथ पर हाथ दैत छलथिन असिर्वाद।
एमहर ओमहर ताकि, आनक दृष्टि बचाय,
ठोर गाल छुबि क' दैत छलथिन दुलार।
गाङो पराशर केँ प्रेम मे बान्हि,
अपन जातिए केँ दिऔलक मनुखक मान, मोल।
तेँ टोल भरिक जनी जाति,
गाङो केँ कतऽ राखी
तरहत्थी पर राखी उठाय,
की चानि पर चढ़ाय,
की आँखि मे करी बन्द
तेहने भाव छल बुझा पड़ैत।
जकरा जखने फुरसति होइक,
गाङो लग छलि आबि जाइत।
जीवछ-जमुनाक भूखो पिआसो जनि
हर्षे गौरवेँ छल मिटा गेल।
कखन रहय नहाइत-खाइत
तकर सुधि-बुधिओ नहि रहलैक।
भरि दिन गाङोक सेवा सांग्रह,
आ जिज्ञासापरक स्वागत सत्कारक उल्लास मे
रहय मगन।

व्यासक पैतृक गमन

गाङो छलि पकबैत माछ।
नेना चुपचाप आबि एक गोटगर माछ
लपकि पड़ा गेल।
"माय! देख नाति केर चालि
बड़के कुटिया ल' गेलउ
गड़तनि काँट तँ बुझथुन सबाद कुटियाक।"
बाजलि गाङो मुदित होइत।
जमुना काँट छोड़बैक आ छौंड़ा
मुँह मे दैत, खन आङन खन दरबज्जा छल करैत।
पहुँचलाह पराशर तही काल,
देखलनि छौंड़ा केँ।
गंगा-यमुनाक मिलन सँ जात नयनाभिराम
श्याम वर्ण।
अपने सन कान, नाक, मुँह ठोर,
डोका सन सन आँखि दीप्तिमान,
चट कोरा लेलनि उठाय।
"नानी! नानी! दौल! दौल। हमला बाबाजी
पकलि लेलक।"
चिकरल नेना भय रहित स्वर मे कछमछाइत।
जमुना गाङो दौड़ि आयलि,
देखि नेना केँ पिता पराशरक कोर मे
हर्षें गौरवें भय गेलि नेहाल।
जमुना चट मड़ोत काढ़ि कूशक आसन आनि
देलक बिछाय।
गाङो गोड़ लागि,

पैर केँ मलि मलि धोय
आँचर सँ देलक पोछि।
पराशर कहल जमुना केँ,
बेटाक झोंटकी छुबैत,
आइ एकरा ल जेबइ हम अपन संग।
करबइ मूड़न, कर्णवेध उपनयन
सबटा संस्कार।
पढ़ालिखा पंडित बना 'दुनू बापुत घुरब संग-संग।
पुनि गाङो दिस घूरि कहलनि सस्नेह
अहाँ केँ नहि लेब संग
तकर कारण छी बुझा दैत।
एक कहबी छै–
"पत्नी पोथीक शत्रु थिक,
रहि न सकय एक ठाम।
हृदय सटलि पत्नी रहति, छोड़ू पढ़बाक नाम।"
दोसर, पुत्रो एकेटा नीक होइछ।
पालन, पोषण, रक्षण नीक जकाँ पूरा करब,
चारु चरित्र सँ समाजमे बनायब मान्य।
बड़ कठिन काज अछि होइत,
से बहु पुत्री केँ होइ छै अनसम्हार।
तेँ एके पुत्र पर विराम देब।
अहाँक वयस अछि बड़ थोड़,
बेटो चल जायत हमर संग
जीवन लागत नीरस, पहाड़ सन अलंघ्य, अपार
तेँ अहाँ करब दोसर विवाह।"
दोसर विवाह सुनितहिँ चौंकलि गाङो
तकलक पराशर दिस आँखि गुड़ारि।
पराशर पुनि बजला हँसैत—

"हँ, हँ दोसर विवाह ।
हमर अभियान मे अहाँ केँ देबय पड़त संग ।
हम रचि आयल छी चक्रचालि ।
बेबा कामुक शान्तनु महाराज,
सिकारक लाथेँ तरुणी रमणी तकैत
एम्हरे छथि बढ़ल अबैत ।
जे शरीर हमरो मन केँ नहि रहय देलक थीर
तकरा लखि शान्तनु निश्चय होयताह अधीर ।
अहाँ अपनहुँ छी चतुरा सयानि
बापो अहाँक छथि चतुरे सुजान ।
तथापि हम छी बुझा दैत
अहींक बेटा केँ देथि राज से शर्त कराक'
गछबनि विवाह ।
जीवछ दिस घुरि,
जँ शान्तनु देखबथि जोर-तोर
तँ गुरुक रूप मे लेब हमर नाम ।
कहबनि—"पराशर मुनि सँ हम सब
लेलहुँ मंत्र, तेँ छी निर्भय स्वतंत्र ।
ओ देलथिन गाङो केँ आशीर्वाद
गाङो ! तोहर बेटा होयतह महाराज ।
बोली लसिगर, स्वर सुदृढ़ ढ़ीठ राखब
अहाँक पीठ पर रहताह पराशर सस्नेह सतत ।
बस ! नातिक चुमाओनक संग
सुनाउ हमरा समदाओन मधुर ।
गाङोक बेटा छै जाइत
अपन बाप मुनिक संग, ई समाचार
बिजलोता समान टोल--
पड़ोस मे गेल पसरि ।

जे जन जतहि रहय
से ततहि सँ दौड़ि गेल।
जीवछक दरबज्जा पर
लागि गेल भीड़।
पराशर खाय-पीबि प्रसन्न बदन हँसैत
पुत्र केँ संग ल' आरंभ कयल अभियान
लोक सब कोसो दूर धरि अरियाति
घुरल आँखि पोछैत
गाङो जमुनाक आँखि सँ
हर्ष-गौरव-बिछोहक नोर
रहल बहैत।
वन गमन दिस पराशरक जय जयकार
सँ छल गुंजित, अनुगुंजित होइत।

गाङ्गेक प्रति शान्तनुक प्रेम प्रस्ताव

जीवछक घर सँ किछु दूर हटि
नदीक जंगलाह-झँखुड़ाह किन्हेर मे
जतय नहि रहय ककरो अबरजात
बनि गेल रहय जनानी घाट ।
टोलक सब जनी-जाति
ओतहि रहय नहाइत ।
अबोध नेना केँ छोड़ि,
केओ पुरुष नहि ओमहर छल जाइत ।
भरि पाँज मोट, दस पन्द्रह हाथ नाम जामुनक सील
पहटल चौपति सन छल दारु बनल ।
गाङ्गो तुरिया छौंड़ी सब सङ, नूआ उतारि
आङ ओङारि नहाय
देह माजैत छलि हँसी विनोद करैत ।
उबटनक सौरभ सँ बन प्रान्तर छल गम-गम करैत ।
शान्तनु खीमा सँ बहराय एकसरे चलला टहलय
धारक काते कात ।
बनक गाछ-वृक्ष, पशु-पक्षी केँ देखैत
डूबल, भासल मन गेलाह बढ़ल ।
ने समये पर, ने दूरी पर रहलनि सोह ।
दुपहर लगिचैल, ता पहुँच गेला ततय
जतय धार मे गाङ्गो सब रहय नहाइत ।
उबटनक सुगन्धि पाबि विस्मित भ'
गेलाह धारक किनार
देखलनि गाङ्गो केँ
रहि गेलाह अवाक-विमुग्ध ।

सुगठित, सोंटल, सुरेब जाँघ-बाँहि, छाती,
उदर, नितम्ब मिलित शरीर ओकर ।
बुझि पड़लनि शान्तनु केँ जनि,
स्वास्थ्य शास्त्रक उदाहरण हो साकार ।
ओकर मांसल छाती पर पीवर उरोज
बुझि पड़लनि जनि,
यज्ञक वेदी पर आमंत्रित सन्तान देवक लेल
वात्सल्य सुवासित पोषक
पीयूष भरल घट हो धयल ।
महल पेटार मे
बन्द अपन रनिवासक रानीगण
रहितहुँ गोरि, बुझा पड़ऽ लगलनि फिक्का
बेकार, निरस।
सबल सन्तानक कामी शान्तनुक मन
गाङो पर लुबुधि गेल ।
खरखर करैत साहीक हेंज चल गेल,
खरखरा उठल पतलो सुखैल,
गाङो तकलक ऊपर ।
शान्तनु केँ देखलक एकटक तकैत ।
चट उपर भेलि आ'
तितले नूआ लपेटि
बंका सिक्कठि झाउक बोन मे
बिलागेलि,
उबटनक सौरभसूत केँ छोड़ैत ।
शान्तनु घुरि खीमामे आबि, पलंग पर पड़ि रहलाह ।
ने सोहेलनि भोजन, ने आबनि नीन आँखि मे ।
पहुँचल मुँहलगुआ मोसाहेब दल,
शान्तनु कहलनि मनक बात ।

एक जन बाजल चट
"एही लेल प्रभु छी बेचैन ?
एतय नहि अछि कोनो राजाक बास
मुनिक बास ज्ञाते रहैत,
कोनो जंगलीक बेटी रहलि हैत ।
चलल जाय खेलय शिकार
बनकें झोरैत, साही सूगर जकाँ
ओहो बन मे भेटबे करति ।
महलक बेली, गुलाब सनि रानी कें छोड़ि
बनक फूल पर सरकारक मन लुबुधि गेल
से आश्चर्यक बात ।
बनफूल भेटब कोन कठिन ?
जतय भेटति पकड़ि लायब
दाम सँ काज चलत तँ लेब कीनि
नहि तँ लेबै छीनि, के रोकत ?
बस चलल जाय ।"
डंका मे पड़ल चोट,
धुतहू धुधुऐल,
गड़गड़ा उठल ढाक, नगाड़ा
घोड़ा हिनहिनैल, बोमिऐल हाथीक हलका ।
शान्तनु हौदा कसल हाथी पर भेल सवार ।
आगू-आगू पैदल सैनिक बढ़ल, जंगल कें झोरैत,
लेने भाला, बर्छा, सहथ, कछार
गड़ाँस, कटार, रवाँड़
बाना धनुष तीर ।
कते नढ़िया, खढ़िया, साही, सूगर, हुड़ार
सियार बहरैल आ पड़ा गेल ।
मुदा शान्तनुक हाथ सँ नहि छूटल एको बाण ।
शान्तनु कें नहि छलनि बुझल ओकर ठाम ठेकान

तेँ हाथी-घोड़ा केँ छोड़ि टोल सँ बाहरे
पैरहि, दसबीस सैनिक मोसाहेब केँ ल' संग
लगलाह घुमय टोल पर,
उबटनक सुगन्धिक सुँघानी लैत ।
पराशरक व्यवहार बिचार सँ
गामक आत्मा छल जीबि उठल ।
शान्तनुक, सेनाक संग टोल पर प्रवेश करब
लागल टोलक वासी केँ अनसोहाँत
अपमान जनक ।
लाठी, सोँटा, भाला, बर्छी, कछार, कटार
तीर-धनुष, गुल्ली-गुलेल,
बाँस बहिङ्ग जेहे पड़लैक हाथ
ल' विदा भेल
नहि एको व्यक्ति रहय छुच्छ हाथ ।
राजा शान्तनु पाबि परिचित सुगन्धि
भ' गेला ठाढ़ ।
ता सभ टोलक लोक आबि जुमल ।
सब जन जनि जोसेँ कन-कन करैत
शान्तनु दिस ललोन आँखि गुड़रि रहल तकैत,
गाङो रहय सावधान,
पराशरक बात छलै मोन,
एक कूशक आसन ल'
बहरायलि आ देलक ओछाय ।
जमुना पाँज भरि पटेढ़क पटिया ओछा देलक
आ' दुनू जनी कात भ' रहलि ठाढ़ि ।
शान्तनु रहलाह विस्मित गाङोक शरीर
आ टोलक सशस्त्र जन समूह केँ देखैत ।
ताही खन पहुँचल जीवछ ।

कयलक प्रणाम हाथ जोड़िक' झुका माथ
आ बाजल मधुर स्वर मे "की करबइ
धार पार सरकार ?
नाव तँ हमरा एके टा अइ ।"
आँखिक पाबि इसारा,
एक मोसाहेब आगू बढ़ि कहलनि
आङुर सँ देखबैत
ई लड़िकी की तोरे थिकौक ?
जी, कहलक जीवछ अनमन स्वर मे ।
पुनि कहलनि मोसाहेब, "तोँ छेँ बड़ भागमन्त,
हस्तिनापुरक महराज छथुन पहुँचल
तोहर द्वारि पर ।
तोहर ई लड़िकी महराज केँ भ' गेल छनि
पसिन्न, विदा करह एकरा महराजक संग
चलह अपनहुँ, मनवांछित धन,
लाबह उठाय,
करह सुख महारानीक बाप बनि ।'
जीवछ ने डरैल, ने घबड़ैल,
बाजल स्वाभाविक स्वर मे
जँ हुकुम भेटय तँ हमहूँ किछु करी उजूर ।
बाजह ! कहलनि मोसाहेब,
किछु उखड़ल सन स्वर मे ।
महाराज शान्तनुक आँखि छल ओड़हुल फूल
सन बनल जाइत ।
"जहिए पराशर मुनि आबि एतऽ हमरा सुहू केँ
देलनि मंत्र, तहिए डर मन सँ पड़ा गेल,
हम नै मानै छिअइ ककरो महराज-उहराज ।
महराज तँ ओ कहाबय जे रोजी-रोटीक

कऽ दिअय उपाय।
जान-मालक रच्छा करय,
मुदा रहओ से बात एखन कात।
बेटो नइ छिक हमर महिस गाय
जे धरब टाका आ देबइ हाँकि।
महाराज कें भेल छनि पसिन्न
से नीक बात;
मुदा ओकरो जँ हेथिन पसिन्न
तखनी ने बिआहक बात उठत ?
हमरा पुछय दिअ।"
गाङो जमुना कें संग लय
जावछ चल गेल आङन।
पराशरक नामे सुनि,
सबहक आङ सँ चललैक घाम,
आँखिक लाली कपीस भेल।
बुझि पड़लनि,
बनफूलक पहरा वासुकीनागे छथि करैत।
जीवछ आङन सँ घुरि आबि बाजल सहज
मधुर स्वर मे
"महराज छथि किछु बेसाहु जरूर
मुदा हमरो बेटी अइ समरथि सयानि,
ताँइ बड़ कुछज्ज नइ, ककरो नजरि मे लगतै।
मुनि पराशर एकर सेवा-सोहाब सँ
भ' परसन देने छथिन असिर्वाद
"गाङो तोहर बेटा हेतउ महराज
से मन सँ दै छिअउ असिर्वाद।"
मुनिक वचन नइ भ' सकइ छनि फूसि।
की महराज एकर बेटाकें बनोथिन महराज ?
हम अपने चालि सँ मुनि कें नइ बनेबनि फुसिआह।

दोमस सहरगंजा रानीक जीवन
कोनो जीवन छिकइ !
खाइत रहथु पकमान-मधुर,
पहिरथु चुनरी-पटोर,
झमकाबथु सोनक गहना
मुदा स्वामीक एको छन दरस-परस लेल
रहथु ललाइत ।
आ राजा भमरा नहाँइत, सुधैंत, बिसरैत,
रहथु घुमैत ।
एहि सँ हमरे सुहूक जीवन अइ नीक ।
जीवछ रहल कहैत,
शान्तनु घुरलाह निरास मन,
सदल बल ।
शान्तनु छलाह राजनीति निपुण महाराज ।
ओ जानैत छलाह जे मनुष्यक मूड़ी कें
काटै मे साहसी वीर,
क्षत्रिय राजा रहथु कहबैत,
परंच बिगड़ल-बताह दन्तार हाथीक
झुन्ड,
फुफकार कटैत दराध
घुमरैत बाघ सिंहक सम्मुख
जीवछेक समाज अछि रहैत
थीर,
ओ सब ज्ञानक अभाव मे
राजा सं अछि डराइत ।
तें पराशरक मंत्रक अर्थ मानलनि
हुनक द्वारा देल-आत्मबलक जागरण,
अजय संगठन बलक परिचय

आत्म सम्मानक हेतु मरि जैबाक प्रेरणा
गाङोक संग विवाह कय
ओकरा सबकेँ अपन समान सम्मान
देनहि छलथिन
अतः हुनक मंत्र विचार पर
सभकेँ विश्वास अखंड छलै भ' गेल।
शान्तनु अपनहुँ तँ ऋषि मुनिक श्रापक
डर सँ छलाहे ग्रस्त त्रस्त
तेँ सहमि गेलाह।

शान्तनुक विरह

विति गेल अनेको दिन,
परंच गाङ्गोक तनक संग बान्हल मन
शान्तनु केँ नहि भेटै छलनि शाँति ।
जवानी मे बहसल-चसकल मन केँ
बुढ़ारी मे सैंतब छइ असंभवे सन कठिन काज ।
कन्याक सहमतिक बात रहो कात
ओकर बापोक सहमतिक नहि रहै पूछ ।
जन-धन-बलक राज रहैक
जकरा पर मन भेल, तकरा कीनि वा छीनि,
छल करैत वासनाक वेग शान्त ।
पराशर पहुँचि पीठ पर, क' देलनि कहर ।
अनमन सन मन स्फूर्त्तिहीन तन,
कांतिहीन मुख, जागरणक परिचायक
अरुण नयन बापक
समर्थ प्रबुद्ध देवव्रतक नजरि पर आबि गेलनि ।
मुदा नहि क' सकथि कारणक अनुमान ।
शान्तनु छलाह पड़ल पलंग पर
देवव्रत गोड़थारी मे बैसि,
छाबा केँ जँतैत, पुछल सहज सन्तानक स्वर मे,
"पिताजी ! अहाँ किए रहै छी उदास अनमन सन ?
राजबैद्य नित्य कहै छथि स्वास्थ्यक समाचार ।
राज्य चिन्ताक कारण कहाँ कोनो छी देखैत ?
ऋषि-मुनिक कृपासँ जन-जन मे छइ बनल विश्वास
जे लोक केँ पूर्व जन्म मे कयल,
पुण्य-पापक फल सँ भेटइ छइ एहि जन्म मे दुख-सुख
इन्द्रक क्रोधेँ होइत अछि रौदी अकाल,
बिगड़ल वरुण आनि दैत छथि बाढ़ि
वायुदेव बिगड़ि अनै छथि बिहाड़ि

अग्निदेव बिगड़ि घरे केँ दै छथि डाहि,
धूमावती भगवतीक बिगड़ने हैजा-ओबा
रोग अछि होइत,
गोटी-चेचक रोगक होइत अछि
कारण भगवती शीतलाक प्रकोप।
एतबे नहि, सब जन केँ छइ विश्वास,
जे धर्म, राजा, चोर, आगि थिक सहोदर भाय,
एहि मे सब सँ जेठ थिका धर्म।
तनिक जँ होइ छनि अपमान
तँ छोटका तीनू भाय
बिगड़ि दै छथि दंड लोक केँ।
एहि सँ चोर डकैतक उपद्रवक बात कोन
जे राजओक अत्याचारक दोष
खसैत छै अपने कपार पर।
ज्योतिषी लोकनिक मतेँ
ग्रहक प्रभाव धरतीपर, लोकक जीवन पर,
छथि पतरा मे लिखैत, सभ केँ विश्वास दैत।
राजाक कर्त्तव्य क्षेत्रो कहाँ अछि बाँचैत,
जाहि सँ प्रजा मे हेतैक असंतोष,
जनमत विद्रोहक भावना ?
सम्प्रति,
बाहरी आक्रमणक बाते उठब असंभव।
तखन चिन्ताक की कारण ?
शान्तनु सुनि देवव्रतक कथन,
बलहँसी आनि ठोर पर कहलनि उठैत,
हम कहाँ छी उदास ? चिन्तित ?
अहाँक प्रतिपादन शैली तँ क' देलक
गदगद। हम छी प्रसन्न,
खूब प्रसन्न, कहि लगला' घर मे टहलय।
देवव्रत पिता केँ लागि गोड़
चल गेलाह अपन निवास दिस।

बूढ़ा मन्त्री ओ भीष्म

पिता शान्तनुक क्लेश देखि
भीष्म भ' उठलाह अधीर।
कारण, एहि देशक लोक पुत्रक हेतु
करैत आयल अछि विवाह।
यौन सुख लागौ कतबो नीक
नहि बनि सकल विवाहक उद्देश्य प्रधान।
ओ सुख तँ बाँझे के भेटै छइ अबाध।
हाट-बजारो मे उपलब्ध होइत रहल,
तदर्थ केओ करत विवाह किएक ?
गर्भक भार क्लेश प्रसवक पीड़ा
सन्तानक गूँहड़ि सन असर्ध काज
सहर्ष उठेबा मे प्रेरक शक्ति
नहि भ' सकैत अछि यौन सुख कथमपि।
सन्तानक लेल नर-नारी सुनैत अछि हरिवंश।
कान्ह पर कामरु लय लाखों लोक पैरहि
काँकड़-पाथर मय पथ पर जाइत अछि बैद्यनाथ
कमरथुआक रूप मे।
से थिक अकाट्य प्रमाण जे भारतवासी
पुत्रक हेतु करैत अछि विवाह।
तेँ सांसारिक अनुभूतिक अवसरदाता
माता-पिता केँ अछि मानैत आयल परम मान्य
ब्रह्मा-विष्णु एकाकार साकार।
देवव्रत भय गेल छला समर्थ विद्वान
पिताक क्लेशक कारण बुझबा लेल,
अधीर हैब छल स्वाभाविक।

साँझक कृत्य संपन्न क' चलि पड़लाह
बूढ़ा मंत्रीक निवास दिस एकसरे ।
अंगरक्षक केँ करब संग वीर मानै छल
उपन उपहास ।
लोक नहि छल हैत मानहीन जे
चमचा–मोसाहेब बनि घरैत संग ।
बूढ़ा मन्त्रीक निवास छल नगर सँ बाहर निरंत मे ।
नगर सँ बाहर होइतहि बुझि पड़लनि
जनि नवे दुनियाँ मे छी पहुंचि गेल ।
देवस्थल सँ बहराइत टटका फूलक गमक
गुग्गुल-धूमनक सौरभ,
मुरज-मृदंग-मजीराक संगीतमय ध्वनि
प्रेम भक्ति रस पागल ललित छन्द पद
झंकृत हृदयक स्पन्दन समान संगीत
देवव्रतक मन केँ कयलक विमुग्ध ।
कतय रणभूमिक रथक घरघरी
हाथीक बोमकार, धनुषक टंकार
तरुआरिक झनकार, गदा-गदाक टक्कर
संजात बज्र समान निनाद
क्रुद्धक ललकार आहतक चित्कार
जनि पाशविकता हो साकार ।
कतय ई प्रेमक मधुमय फुहार ।
बुझि पड़य लगलनि देवव्रत केँ
राजाक काज गर्हित पाशविक ।
आयल बूढ़ा मन्त्रीक निवास
सोनहूल, सरीफा, कटहर, कचनार, नेवो
लताम, आम, अमड़ा, अमलतास सन फूल-फलक
गाछे छल बनल छहरदेवाल ।

आगू स्थान रिक्त बनल द्वार फाटक विहीन।
ने केओ पहरू पहरा करैत।
भीतर मुनिक कुटी सँ किछु पैघ दोचारी
लेबल ढौरल।
जकर आगू मे सबजी खड़रल
जनि हरियर गलैचा हो बिछौल।
उत्तर भर गाछक तर मे किछु गाय महिंस
छलि पाजु करैत
सभक थरि मे धुँआइत घूड़।
सबजीक चारू कात-कुन्द कुमुदिनी, तगड़,
नेबारि, अड़हूल, चन्द्रकला, इन्द्रकमल, पत्ताबहार
कोनो फुलैल, कोनो कलसल नयनाभिराम।
देवव्रत किछु छन मुग्ध मन रहला गाछक तर मे
ठाढ़ जनि शान्तिक सागर मे होथि पहुँचि गेल।
पहुँचलाह किछु सभ्य गण पोसाकेँ स्वच्छ सरल
मुद्रेँ गंभीर, चिन्तनशील, स्मितमुख।
बूढ़ा मन्त्री चट पहुँचि स्वयं कयलनि स्वागत।
सभ बैसि गेला दूबिमय ओछौन पर।
बूढ़ा मन्त्रीक सहधर्मिणी एक चङेरा राखि बीच मे
खड़िकाक सहयोग सँ बनौल बाटी सनक दोना
जाहि मे छल
घेँचुल उसिनल, सारुक पकौल, बड़री भूजल
पागल मखान
एक एक टा सबक हाथ मे दैत कहल
हमहूँ अनमना मे छी किछु कयने रचना
जँ अपने सबकेँ लागत नीक तँ रचना रहब करैत।
बूढ़ा मन्त्री चट मुँह मे द' चिबबैत
कहलनि हँसैत—

"वाह ! ब्रह्मानन्द सहोदर काव्त रसकेँ
कहनिहार पंडितक चानि पर
मारल मूसर समधानि ।
व्यंजनाक विलक्षण प्रयोग छी कयने
आब अक्षरमय कवितोक रस भ' जेतैक तीख।"
मंडलीक कार्यक्रम अनुमानि अधीर देवव्रत
रहि नहि सकला नुकैल ।
पहुँचलाह मन्त्रीक निकट ।
सभ कयल उठि प्रचलित अभिवादन ।
कहलनि मन्त्री —
"कुमार ! ई सभ थिकाह कविगण ।
प्रतिदिन राज-काज, अपन काज कय
छी सुनैत हिनक सभक रचना विलास ।
कोनो अज्ञात पुण्यवश पाबि गेल छी
हिनक सभक अनुकम्पा असीम
प्रायः नित्तह छथि आबि जाइत ।
कुमार ! हमरा बड़ लाभप्रद आनन्द भेटइए
कविक संगति सँ ।"
कहलनि मन्त्री आह्लादित स्वर मे ।
"मंत्रिवर ! राजाक प्रति प्रजाक अनुराग-विराग
शासन समाज मे व्यवस्था मे परिवर्तनक इच्छा
उपजब थिक स्वाभाविक ।
तकर ज्ञान, निर्लिप्त, निर्लोभ, निर्भीक कविक
वाणीए मे भेटि सकैछ ।
जे व्यक्ति जे समाज भ जाइत अछि साहित्य सँ दूर
तकर दिमाग भ' जाइत छै डबरा
सड़ल, पीलु केर जन्मस्थल ।
कवि-समाजक संग अपनेक सम्बन्ध थिक स्तुत्य, मुदा
करब विचार कोनो दोसर दिन एहि विषय पर ।
आइ आयल छी, अपनेक संग किछु गोपनीय
विचार अछि आवश्यक ।
बूढ़ा मन्त्री कवि समाज सँ अनुमति ल' चल गेलाह

घरक भोतर ।
जैतहि अन्दर देवव्रत पुछल पिताक उदासीनताक
कारण ।
कहलनि मन्त्री लज्जित स्वर में—
"कुमार ! जुआनी मे बहसल वासना वेग कें बुढ़ारी मे
दाबब छैक कठिन
अथच, बुढ़ारीक मर्यादाक भावना बुझनुक
लोक कें नइ छइ करय दैत ।
जुआनीक सदृश अबाध ।
परिणाम होइत अछि जे
वासना वेग
अन्तर्मुख भ' हृदये कें अछि पीड़ा दैत ।
सैह भ गेल छनि महाराज कें ।
गाङो पर लुबधल मन आ ओकर शर्त सब सुना
देलनि ।
देवव्रत अविचलित स्वर मे कहलनि
"चलल जाय कालिह सकाले
शर्त मानि ओहि देवी कें सम्मान आनि देबनि ।"
"कुमार ! एना हड़बड़ मे निर्णय नहि कयल जाय
ओ बहत्तरा छथि भ' गेल ।
बालक समर्थ विद्वान
कामवासनाक पूर्त्तिक लेल रनिवास मे
सभ वयसक नारी छनि अलेल
तथापि बाट-घाट मे देखलि जंगली
छौड़ी पर छथि लुबुधि गेल
महाराजक इच्छा छनि अनार्य असंगत ।"
कहलनि मन्त्री जी निर्भीक स्वर मे ।
"मन्त्री जी ! अपने कें हमरा प्रति स्नेह

नहि करय दैछ विचार निष्पक्ष भाव सँ।
हमर पिता हस्तिनापुरक महाराज
वीर, विक्रमी, बलशालीक रूप मे
विख्यात छथि जगत मे।
अपन अभिलाषा केँ पूर्ण करैत आयल छथि
केवल आइ हमर ममता सँ छथि भेल विवस।
पिताजी केँ की अन्नो वस्त्रक लेल पड़तनि
हमर प्रयोजन ?
मन्त्री जी ! दशरथ ठीक एहने शर्त मानि
कयने छलाह विवाह कैकेयीक संग।
रामचन्द्र पिताक अभिलाषा पूर्त्तिक लेल
पौलनि इतिहास मे सादर सस्नेह स्थान।
इतिहास मे सस्नेह स्थान पायब थिक
अनमोल रतन।"
"कैकेयी छली क्षत्रिय कुमारि
हुनक पुत्र राजा भेलेँ
नहि होइत व्यवस्थाक उल्लंघन
एतय तँ प्रचलित व्यवस्थाक जड़िए कटि जैत।
अनार्य गोढ़नीक पुत्र राजा हैत ?
कहल बूढ़ा मन्त्री व्यग्र चिन्तित स्वर मे।
मुदा देवव्रत रहला धीर-अडिग।
"मुनि महर्षि एक बनौल नियम ने अछि
व्यवस्थाक आधार
महर्षि पराशर प्रायः ताहि मे चाहै छथि परिवर्तन।
दोमस हमरा नहि होइत अछि राज्यक लोभ।
के कहय राजाक पद पाबि कोन बाट धरब !
भूख सँ लोक अछि पाप कोन करैत अवश्य
मुदा ताहि सँ कते बड़ पैघ अनर्थंकर पाप

करबैत छै सुख विलास भावना
धन संचय ओ राज्य विस्तारक वासना ।
भरितहि पेट मे तृप्ति छइ आबि जाइत
सुख विलासक वासना छइ होइत असीम अनन्त
सम्प्रभुता, वैभव, बल, सामर्थ्य पाबि
मानव कल्याणकर केनिहारक संख्या कते भेटत ?
परंच, मानव संहार केनिहारक संख्यासँ
अछि इतिहास भरल ।
अपन अस्त्रज्ञान ओ हस्तिनापुरक
कुरु साम्राज्यक गद्दी
अछि पर्याप्त अहंकार केँ जन्म देबाक लेले ।
मंत्रीजी ! हमरा एहि सँ दूर रहबाक अवसर
भेटि जायत ।
"चलू ! कविगण होइत हेताह अधीर
हमरा संयोगहि अछि भेटल
कविगणक मुखसँ कविता सुनबाक ।
दूनू जन आबि बैसि गेलाह सबजी पर ।
उठलाह कविएक वयसेँ नवीन
"भूखल रही रही साग बरु खाइ
फूसि न करी ककरो बड़ाइ ।
पैघक घर लग वास
धार किनारक चाव स
तकर कोन बिसवास ?"
भरल रहै छै पेट, निचू रहै छै चार
तखन रुचै छै गीत रासमलार
सिङार पेटार ओ रस सिङार
दोसर कवि पढ़लनि
"मानव हित मे अरपय जान

जेना मेघ सूरज ओ चान
से थिक पंडित, सैह महान ।"
वाह विलक्षण कहलनि देवव्रत प्रसन्न मन ।
उठलाह तेसर जन वयसेँ जवान स्वर प्रखर निर्भीक
आत्मविश्वास छलकैत पद पद मे-
एक धरती माय केर सन्तान
थीक मानव सभ सहोदर भाय समान ।
बसौ कोनो ठाम, हिमालय पर, विन्ध्यपर
समतल धरा पर, विपिन मे, गिरि गुफामे
गाम मे वा नगरमे ।
कहाबौ केओ देव, दानव, दैत्य, प्रेत, भूत पिशाच
विप्र, क्षत्रिय, वैश्य, कोल भील, सौतार, डोम
दुसाध चमार ।
माटि पानि, बसात, रौदक कारणे उत्पन्न
होइत अछि लाल पीयर कारी श्याम चामक रंग
मुदा भीतर मे बहै छै
शोणित एके रंगक लाल
एके रंग रहै छै मांस मज्जा हाड़ ।
तेँ सब थीक एके मनुष्यक भेद
मानव समाज केँ खंडित करय जे
त्याज्य थिक से वेद, धर्मशास्त्र, पुराण ।
व्यवसाय कौलिक बनय कालेँ जाति ।
एहि मे ऊँच नीचक छै-न अवसर
जाति परिवर्तनक थिक अर्थ बदलब अपन व्यवसाय
से चलक चाही वेरोक टोक ।"
"अद्‌भुत चिन्तन अछि कविता मे"
कहल देवव्रत विस्मित नयने कवि केँ देखैत ।
चारिम कवि गाबय लगलाह अपन कविता

काव्य रसक सँग संग संगीतक रस मे
सब भासय लगलाह ।
"मानव हित चिन्ता ज्वालेँ दिन-राति जरैत रहै छी
दय रूधिर अपन दानव केँ मानव बनबैत फिरैछी ।"
साधु साधु ! कहि देवव्रत
बूढ़ा मन्त्री ओ कविगण केँ कय नमस्कार
चललाह अपन निवास
मुदित मन ।

गाङ्गेक हस्तिनापुर गमन

महाराज शान्तनुक बेटा-जेठ राजकुमार,
जे होइतथि स्वयं महाराज
से अपनहि आबि
मानि लेलथिन जीवछक शर्त,
गाङ्गेक बेटे हेतइ शान्तनुक बाद महाराज ।
सत्यव्रत रहि जेताह कुमार,
जाहि सँ जनमबे नइ करतइ
राज्यक दोसर हकदार ।
काल्हि औथिन ओ राजकुमार,
गाङ्गो केँ ल' जेथिन रथ पर सतमायक रूप मे ।
भरि गाम मे एक एही बातक टा
चर्चा छल होइत ।
केओ शान्तनु केँ बहतरा नढ़ेर
कहि छल दूसैत,
केओ सत्यव्रत केँ मानल झोँकाह, सनकाह ।
केओ गाङ्गेक मधुर स्वभाव, बात व्यवहारक
फल मानल एहि स्वभाव केँ ।
केओ पराशरक आशीर्वाद केँ मानल कारण मूल ।
गाङ्गो छलि भय गेलि अवाक
जनि भ' गेल रहैक अभिचंक ।
पराशरक संग कयलक प्रेम बिवाह,
रहलि घरहि (नहिरे) मे
नहि बदललै जीवनक चालि-ढंग ।
शान्तनुक संग विवाह सँ उनटि जेतैक संसार ।
थाल माटि मे रहनिहारि,

बैसति सोनक सिंहासन पर,
चेड़िन, खवासिन रहतैक ठाढ़ि,
हुकुमक पालन लेल,
कोना सकति सम्हारि महारानीक पदभार ?
गाङो छलि चिन्ता मे डूबलि।
सन्तान भ' जाउ कतबो पैघ-सयान, विद्वान बुधियार,
मायक नजरि मे
ओकर शैशवे रूप छैक रहैत ठाढ़
यैह थिक मायक रूप,
भारतीय संस्कृतिक आत्मा मूर्तिमान।
यमुना, तेँ गाङो केँ देबय लागलि किछु उपदेश।
कहलक यमुगा गाङो केँ अपना लग बैसाय-
''गाङो हम तँ अपनहि छी जंगली, गमारि
गरिबक घर-मे जनमजि पाललि।
हम कोना सिखेबौ रानी महारानीक चालि बेब्हार ?
मुनिजी पर रखिहेँ धेयान
हुनके असिरबाद लगेतौ पार।
तैओ छिअउ कहैत, कहबी छै
''गरीबक बेटी धनिक घर गेलि,
कोठी भरि चाउर देखि मन उजगुज भेल।''
थाल माटि मे रहनिहारि,
चढ़बेँ सोनक सिंहासन पर,
तेँ रहिहेँ सावधान,
मगजे ने उनटि जाउ।
केहनो पैघक बेटी रहथु,
रोआब करब थिक कुचालि।
चेड़िन खवासिनी जे रहतउ
सब रहतउ तोरे सयान
तेँ मीठ बोली मे करिहेँ बात,
तै सँ ने घटतउ महारानीक इज्जति, मान।
ऋषि-मुनिकेर पूजा तँ करइ पड़तउ,

गरीवो बूढ़-बुढ़ानुसक करिहइ आदर मान ।
नेना-भुटकाक संग रखिहें सिनेह
तै बेर मे नइ तकिहइ नूआ-फट्टा, मूँह-कान,
मायक नजरि मे सब सन्तान
थिक एक रंग, एक समान
"राजोक घर मे उठि सकब छइ लाला, छी छी
जँ रानी रहतै फूहरि नारि
माउगिक बड़का दोष छिक,
हैब जिहुलाहि–पेटाहि,
अपने नित दुखिते रहय
पुरुख काटइ काहि ।
झगड़ाहु माउगि जइ घर रहय
तइ घर पुरुखक मन रह घोर।
से घर नरक समान छिक
बरिसय संतत अङोर ।
स्वामी संतति घर-धनक
माउगि करय रखबारि
से घर सरग समान हो
घरनो लछमी-नारि ।
जे काज नइ करा सकइए चानी-सोन,
से करा सकइए मिठबोल पर
सूखल रोटी-नोन ।
तैं मीठ बोल सबतरि कहबय अनमोल ।"
हम मुरुख माउगि की सिखेबउ,
साहस, धैरज, मीठ बोल सँ लगबिहें पार ।
लोक ने कहय पाबय जे छोटका लोक
राजा-रानी बनबाक जोकरे नइ अइ होइत ।
जो एक झपकी ल' कर आराम
हम आब छी लोकक लग जाइत ।

सिंहासन पर सत्यवती

अपन सभक देश मे सुन्दरताक
पहिल आधार-गुण अछि
मानल जाइत गोरवर्ण।
तेँ "सए सुनराइक बराबरि एक गोराइ"
कहबी अछि जुग जुग सँ प्रचलित।
भरिसक पहिले कारी रानी सत्यवतीए छली भेलि।
महाराज शान्तनुक रोब-धाख,
कुमार देवव्रतक सौजन्य-सामर्थ्य तकर संग
अपूर्व त्याग हुनको
बना देलक दर्शनीय
"केहनि छथि ओ करिकी सत्यवती
जनिक रुप लावण्य शान्तनुकेँ
कय देलक विमुग्ध विमूढ़"
से कुतूहल सभक अन्तर मे छल विद्यमान।
तेँ शान्तनुक स्वजाति राजा, सामन्त, सरदार केँ
क' देलक उपस्थित भीड़ रूप मे।
सत्यवतीक पिता जीवछक समाज
समाङ, स्वजाति, बाढ़िक पानि जकाँ
छल अबिते जाइत।
कुमार देवव्रत आगतक स्वागत मे अस्तव्यस्त।
सामगान शान्तिगानक संग महाराज शान्तनु
सत्यवतीक संग बैसलाह सिंहासन पर।
शान्तनुक मुख प्रसन्न किछु लज्जित सन
सत्यवतीक मुखमंडल अभिचंक आतंकरहित

गंभीर प्रसन्न
ठोर पर वात्सल्यपूर्ण हास चमकैत ।
आँखि नचैत जनि ककरो रहथि तकैत ।
सत्यवती-शान्तनुक विवाहक प्रेरक पराशर मुनि
पहुँचलाह तहीखन
जनि अनासुरतीए होथि आबि गेल ।
सब कयल यथाविधि पूजन प्रणाम ।
मुनि सब केँ बैसैक आदेश दैत
अपने ठाढ़े रहि
कहलनि गंभीर स्वर मे
"आयुष्मान कुमार देवव्रत ।
अहाँक असाधारण त्यागमय एहि काज केँ
पितृभक्तिक आदर्श मात्र कहि
हम नहि विरत हैब ।
कारण हमर मतेँ से अहाँक प्रति अन्याय हैत ।
देश-राज्य समाजक हित मे अहाँक
काज, अभूतपूर्व त्याग भेल अछि बेजोड़ ।
एहेन त्याग ने कयलनि रामचन्द्र
ने केओ आन दोसर ।
रामचन्द्र, कट्टर वशिष्ठक आज्ञा सँ
तपरत शम्बूक केँ अकारण देलनि मारि,
अहाँ ओही शम्बुकक स्वजन केँ राजसिंहासन पर
बैसबाक अधिकार अछि देल ।
अपन सुख सान केँ देलहुँ ठेलि ओंघड़ाय !
हमर मन नहि अछि अघाइत, अहाँक
प्रशंसा नहि, स्तुति करबा सँ ।
अहींक समान महामनाक त्याग सँ
कोनो देश सुदृढ़ ओ सुखी हैत ।

महाराज ! एक व्यक्ति सँ नहि अछि देश बनैत ।
जखन एक व्यवस्था सँ चालित
विशाल जनसमूह अछि होइत,
तँ ओ जनसमूह अपन वास भूमिकेँ
देशक संज्ञा अछि दैत ।
व्यवस्थाक संचालक शक्ति केँ राजा
अछि कहल जाइत ।
व्यवस्थाक पालनक हेतु
तीन प्रकारक बल मे कोनो एक बलक
उपयोग अछि होइत—
एक शस्त्र बल, दोसर धनबल
तेसर स्नेह सद्भावना बल ।
शस्त्र बल सँ चालित जनसमुदायक
आत्माए छै मरि जाइत ।
तेँ राजा केँ मरितहिं सैनिक-प्रजा
सब मानि लैत अछि हारि ।
विजेताक पामौजी अछि करय लगैत
राजाक हारि सँ अपन हानि
नहि अछि मानैत ।
ग्लानिक तँ बाते नहि छै उपजैत
धनबल सँ चालित व्यवस्थाक जन
भ' जाइत अछि कुकुरक समान ।
जे दैत छइ अहगर खीर
तकरे दिस गेलि घूरि ।
राजाक प्रति विश्वासघात एहि
वर्गक लेल अदना बात अछि होइत ।
स्नेह सद्भावना बल अछि होइत सबसँ
मजगूत संगहि मधुर ।

परंच ताहि लेल राजा कें
अपन सुख सान कें छोड़य छइ पड़ैत ।
जन समुदायक सुखे कें
अपनो सुख अछि मानैत ।
जन जन, देश राज कें अपन
राज देश अछि मानय लगैत ।
जतेक अधिक लोकक सुख सुविधा करत
व्यवस्थाक संचालक
तकरे अनुपात मे राज्य मजगूत बनत ।
सत्यवती कें सिंहासन पर बैसाय
अहाँक पुत्र रत्न महामना देवव्रत
कुरु राज्यक विशाल जनसमूह कें
मनुष्य बना देलनि ।
ओ जनसमूह कुरु राज्यक खाम्हक
करत काज
महाराज ।
जेना धरतीपरक दृश्य जल सँ
बहुत अधिक जल धरतीक पेट मे छैक
तहिना मनुष्यक सुन्दरता
चामक भितरे मे अछि रहैत
सत्यवतीक बुद्धि–व्यवहार-चातुरी
सँ हैत ज्ञात ।
कोइले मे अछि हीरा रहैत,
नहि चानी सोनक पहाड़ मे ।
जय शान्तनु सत्यवतीक संगम
संजात जीवन प्रवाह
जय त्यागवीर विशालमना
देवव्रत
जय गतिशील विचार